मंत्र·तंत्र·यंत्र
वि ज्ञा न

दीपावली पर्व

इस वर्ष दीपावली २६-१०-८६ रविवार को है। इसके पूजन मुहूर्त निम्न प्रकार से है।

१- बही खाते लाने का मुहूर्त—

व्यापार हेतु बही खाते लाने के लिए मुहूर्त निम्न है-

क) ४-१०-८६ शाम को ४ - ३० से ६ बजे तक।
ख) ५-१०-८६ प्रातः ११ - ४६ से १ बजे तक।
ग) ६-१०-८६ प्रातः १० - १० से ११ - ४० तक।
घ) १८-१०-८६ सुबह ११ - बजे के लगभग।

२- धनत्रयोदशी - कुबेर पूजा मुहूर्त—

क) २६-१०-८६ शाम को ६ बजे से ७ - २० तक।
ख) २७-१०-८६ प्रातः ८ - ४० से ६ - ४५ तक।

३- महालक्ष्मी पूजा

क) २६-१०-८६ दीपावली के दिन प्रातः ६ - ४० से १२ - ३४ तक कलम दवात पूजा तथा मन्दिर-पूजा मुहूर्त है।

४- लक्ष्मी पूजन—

क) शाम को ६-५१ से ८ - ५२ तक - वृषभ स्थिर लग्न।
ख) रात्रि को १ - २१ से ३ - ४१ तक भी महालक्ष्मी पूजा हो सकती है, इस समय स्थिर सिंह लग्न चल रहा होगा। इसी समय विशेष लक्ष्मी पूजन भी हो सकता है।

५- लक्ष्मी साधना मुहूर्त—

क) पत्रिका में जितनी भी साधना प्रयोग या लक्ष्मी से संबंधित विशेष प्रयोग दिये है, वे २५-१०-८६ से ३०-१०-८६ के बीच कभी भी सम्पन्न किये जा सकते है, क्योंकि ये सभी दिन दीपावली दिवस ही कहलाते है। यह कोई आवश्यक नहीं है, कि दीपावली की रात्रि को ही प्रयोग हो।

६- बही लेखन मुहूर्त—

क) ३०-१०-८६ प्रातः ६-४५ से ८ - ११ तक।

शुभ मुहूर्त में किये गये कार्यों से सफलता निश्चय ही प्राप्त होती है।

वर्ष–६

अंक–६

सितम्बर-१९८९

※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ महालक्ष्मी च विद्महे
विष्णु पत्न्यां च धीमहि
तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ।।

हे महालक्ष्मी ! इस शुभ अवसर पर आप मेरे घर में स्थायी निवास करें, हे विष्णु पत्नी लक्ष्मी ! आप विद्या, बुद्धि, बल एवं वैभव दें, जिससे हम सम्पन्न, सुखी एवं यशस्वी बन सकें ।

एक अद्वितीय प्रयोग

पंचदशी यंत्र सिद्धि

दीपावली के पर्व पर यों तो कई साधनाएं प्रचलित है, परन्तु जनसाधारण के लिए यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसे पंचदशी यन्त्र साधना या "पन्द्रहिया यन्त्र" साधना भी कहा जाता है।

पन्द्रहिया यन्त्र का सैकड़ों हजारों वर्षों से महत्व रहा है, दीपावली की रात्रि को साधक अपने घर की दीवारों पर पन्द्रहिया यन्त्र अंकित करते है, बही खाते में पन्द्रहिया यन्त्र लिखते है और प्रत्येक शुभ कार्य में इस यन्त्र की महत्ता मानी गई है।

वास्तव में ही पन्द्रहिया यन्त्र देखने में भले ही छोटा लगे, परन्तु इसका प्रभाव अपने आप में अचूक है, अन्य साधनाएं जल्दी सिद्ध हो या लेट सिद्ध हो, उसमें सफलता मिले या न मिले, परन्तु पन्द्रहिया यन्त्र सिद्ध करने पर सफलता मिलती ही है।

लौकिक व्यवहार और शास्त्रों में पन्द्रहिया यन्त्र सिद्धि के बारे में निम्न लाभ या प्रभाव बताये हैं —

१. यह यन्त्र सिद्ध होने के बाद इसे धारण कर, यदि साधक दीपावली की रात्रि को या बाद में जुआ खेलने जाता है, तो उसे सफलता मिलती हैं, यों भी कई लोग दीपावली की रात्रि को जुआ खेलते देखे गये हैं।

२. यह यन्त्र सिद्ध होने पर यदि दीपावली के दिनों में लाटरी का टिकट खरीद कर लावे तो उसे अनायास धन प्राप्ति की संभावनाएं बनती हैं, यों इससे सम्बन्धित मन्त्र का जप करने पर साधक को रात्रि में स्वप्न हो जाता है, और उसे स्वप्न में यह पता चल जाता है कि कौन से नम्बर की लाटरी खरीदनी है तथा किस राज्य की खरीदनी है, इसके अलावा भी अन्य कई तरीकों से अनायास धन प्राप्ति की संभावनाएं बन जाती है।

३. इस यन्त्र को धारण करने से या पूजा स्थान में रखने से निरन्तर उन्नति होती रहती है, तथा अपने हाथों से शुभ कार्य होते रहते हैं।

४. इस यन्त्र को घर में रखने से निश्चय ही घर के लड़ाई झगड़े समाप्त हो जाते हैं, तथा मन में प्रसन्नता

बनी रहती है, साथ ही साथ व्यक्ति का तनाव भी समाप्त हो जाता है।

५. इस यन्त्र को दीपावली की रात्रि को पूजा करने से पूरे वर्ष भर घर में लक्ष्मी का आगमन बना रहता है।
६. इस यन्त्र को यदि किसी कपड़े में बांध कर घर के ऊपर किसी डन्डे में लटका दें, तो ज्यों ज्यों हवा इस कपड़े को स्पर्श करेगी, त्यों त्यों घर में लक्ष्मी की वृद्धि होती रहेगी।

७. इस यन्त्र को जेब में रखने से घुड़दौड़ में, तथा अन्य आकस्मिक धन प्राप्ति के कार्यों में सफलताएं मिलती रहती हैं, और व्यक्ति को किसी प्रकार की परेशानी नहीं रहती।

८. इस यन्त्र को यदि घर की चौखट के साथ बांध दिया जाए तो बीमारी नहीं रहती और घर में सभी स्वस्थ और निरोग बने रहते हैं।

९. यह यन्त्र धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाला है, इसीलिए शास्त्रों में इस यन्त्र को धारण करना या घर में रखना श्रेष्ठ माना है।

वास्तव में ही पन्द्रहिया यन्त्र हमारे जीवन का सौभाग्य है, और इसकी सिद्धि दीपावली के दिनों में ही सम्पन्न की जा सकती है, इस साधना को धनत्रयोदशी से दीपावली के बीच अर्थात् इन तीन दिनों में सम्पन्न की जाती है. दूसरे शब्दों में पन्द्रहिया यन्त्र साधना २७, २८, २९ अक्टूबर ८९ में किसी भी दिन सम्पन्न की जा सकती है।

पन्द्रहिया यन्त्र

यह यन्त्र पूर्ण आकस्मिक सिद्धिप्रद मन्त्रों से सिद्ध करना चाहिए, और किसी धातु पर या भोज पत्र पर विजयकाल में इस यन्त्र को अंकित कर तावीज में भर देना चाहिए, साथ ही साथ इस तावीज पर अष्ट सिद्धि मंत्रों से साधना कर उस यन्त्र को सिद्ध कर देना चाहिए।

पन्द्रहिया यन्त्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

उपरोक्त प्रकार से यन्त्र का निर्माण भोज पत्र पर अथवा ताम्र या किसी धातु पर विजयकाल में अंकित कर उसे अपने सामने रख कर अष्ट सिद्धि मन्त्रों से सिद्ध किया जाना जरूरी है।

ऐसा करने के बाद यह यन्त्र प्रभावकारी और सफलता दायक बन जाता है, तब साधक धनत्रयोदशी अर्थात् २७-१०-८९ को या दीपावली के दिन अपने सामने किसी थाली में उपरोक्त प्रकार से यन्त्र का निर्माण कुंकुम से करें।

थाली में कुंकुम के द्वारा उपरोक्त पन्द्रहिया यन्त्र अंकित कर उसके उपर इस सिद्ध किये हुए पन्द्रहिया यन्त्र को तावीज में भर दें, और उसकी चावल तथा पुष्प से पूजा करें।

पूजा का विधान कोई पेचीदा नहीं है, अपितु यन्त्र पर १०८ बार थोड़े थोड़े चावल हाथ में ले कर चढ़ाने हैं, और प्रत्येक बार " ॐ महालक्ष्मी आगच्छ आगच्छ धन प्रदाय नमः " मंत्र का उच्चारण करता रहे।

इसके बाद यन्त्र के सामने दूध से बने हुए प्रसाद का

भोग लगावे और यन्त्र पर पुष्प समर्पित करें, तथा सामने तीस तेल के दीपक लगावे।

ये तीस दीपक तीस दिनों के प्रतीक हैं, इसका तात्पर्य यह है, कि पूरे वर्ष प्रत्येक महीने मुझे लक्ष्मी प्राप्त होती रहे, तथा सिद्धि मिलती रहे।

इसके बाद साधक स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की तीस माला मन्त्र जाप करें।

पन्द्रहिया लक्ष्मी मन्त्र

ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं लक्ष्मी आगच्छ ह्रीं ह्रीं नमः

मन्त्र जपने के बाद साधक उस यन्त्र को धागे में पिरो कर या उसमें सोने की चैन डाल कर गले में धारण कर लें, अथवा बांह पर बांध लें, साधक चाहे तो इस यन्त्र को पूजा स्थान में भी रख सकते हैं, इस साधना में उपरोक्त मन्त्र को पूर्ण श्रद्धा के साथ जप करने पर अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है।

पन्द्रहिया यन्त्र : सर्वथा मुफ्त में

वास्तव में ही दीपावली के पर्व पर पन्द्रहिया यन्त्र साधना एक अनमोल प्रयोग और खजाना है, इस यन्त्र को प्राप्त करना ही, सौभाग्य माना जाता है, पत्रिका ने दीपावली के अवसर पर इस प्रकार का अष्ट सिद्धियों के मन्त्रों से सिद्ध "पन्द्रहिया यन्त्र तावीज" सर्वथा मुफ्त में देने की व्यवस्था रखी है।

इसके लिए आप कोई एक सदस्य बना कर यह यन्त्र सर्वथा मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं।

आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर भेज दें, या अलग कागज पर अंकित कर भेज दें, वी. पी. छूटने पर आपको यह यन्त्र सुरक्षित रूप से मिल जायेगा।

पंद्रहिया यंत्र प्राप्तिः प्रपत्र

मैं पत्रिका सदस्य हूं और इस प्रकार का दुर्लभ यंत्र सर्वथा मुफ्त में प्राप्त करने का अधिकारी हूं, कृपया आप १०५)रू० की वी. पी. से सिद्ध किया हुआ पन्द्रहिया यंत्र मुझे निम्न पते पर भेज दें, मैंने पत्रिका सदस्य बनने वाले से पत्रिका शुल्क प्राप्त कर लिया है।
वी. पी. छूटने पर आप निम्न मेरे मित्र को पत्रिका सदस्य बना दें और इस वर्ष की पूरी पत्रिका भेज दें।

मेरे मित्र का नाम ....

मेरे मित्र का पूरा पता ....

....

आप मुझे १०५)रू. की वी. पी. से "अष्ट सिद्धि मंत्र से युक्त पंद्रहिया यंत्र" भेज दें, मैं वी. पी. छुड़ाने का वायदा करता हूं। वी. पी. छूटने पर उपर लिखे हुए मेरे मित्र को पत्रिका सदस्य बना दे उसके खाते में ९६) रू जमा कर पत्रिका भेज दें।

वी. पी. निम्न पते पर भेजे-

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या ....

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

भगवती तारा की दुर्लभ साधना विधि

महान योगीराज परम पूज्य स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज ने अपना सारा समय तारा साधना और उसके विविध प्रयोग प्राप्त करने में ही लगाया है, एक प्रकार से देखा जाय तो तंत्र के माध्यम से तारा सिद्ध करने के जो लुप्त प्रयोग योगीराज जी ने प्राप्त कर साधकों को स्पष्ट किये हैं, वे अपने आप में अन्यतम हैं। यह दुर्लभ साधना विधि भी उनके द्वारा ही हमें प्राप्त हुई है।

तारा साधना महाविद्या तो है ही, पर तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से वर्णित है, कि तारा सिद्ध करने पर साधक को नित्य प्रातः उठने पर उसके सिरहाने दो तोला स्वर्ण स्वतः प्राप्त हो जाता है, जो कि भगवती तारा की कृपा के फलस्वरूप साधक को प्राप्त होता है।

नीचे दिया हुआ, प्रयोग "नाथवासर" क्रम से है। इस क्रम में तांत्रिक विधि के अनुसार प्रकाशा, विमर्शना, आनन्दा, ज्ञाना, सत्या, पूर्णा, स्वभावा, प्रतिभा, और सुभगा, के क्रम से साधना सम्पन्न होती है, जो कि अपने आप में सर्वथा गोपनीय और महत्वपूर्ण है।

तारा जयन्ती के अवसर पर यह दुर्लभ साधना प्रयोग पत्रिका पाठकों को समर्पित करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

यों तो भगवती तारा की साधना नवरात्रि में या महीने की किसी भी अष्टमी से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु तारा जयन्ती के अवसर पर यदि इस दुर्लभ साधना प्रयोग को सम्पन्न किया जाय तो साधक के लिए यह अपने आपमें ही महत्वपूर्ण चिन्तन है।

यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती हुई भी परम गोपनीय, दुर्लभ और महत्वपूर्ण है। कम पढ़ा लिखा साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। न तो यह साधना पेचीदी है और न इसमें जटिल विधि विधान ही है, इसके बावजूद भी यह साधना तुरन्त फलप्रद एवं शीघ्र सिद्धि दायक है। हमने स्वयं यह अनुभव किया है, कि स्वामी जी की बताई हुई विधि से यदि इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो अद्वितीय सिद्धि प्राप्त होती है।

और ऐसी साधना सम्पन्न करने वाला सामान्य और गरीब व्यक्ति भी सिद्धि प्राप्त होने के बाद लाखों करोड़ों में खेलने लगता है, यही नहीं अपितु इसके अलावा भी कई प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती है जिसके फलस्वरूप वह पूर्ण सफलता प्राप्त कर जीवन में धन, वैभव सुख सौभाग्य और अद्वितीय सिद्धियां प्राप्त करने में समर्थ सफल हो पाता है।

मेरी राय में जब हमें इतना उच्चकोटि का और अचूक तांत्रोक्त प्रयोग प्राप्त हुआ है, तो हमें इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह जिस दिन भी इस साधना को सम्पन्न करना चाहे, वह चाहे दीपावली का दिन हो, या तारा जयन्ती का अवसर हो, अथवा किसी भी महीने की अष्टमी हो, साधक प्रातःकाल उठकर स्नान कर यह निश्चय कर ले, कि मैं आज पूर्ण रूप से तारा साधना सम्पन्न करूंगा और भगवती तारा को सिद्ध कर जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करूंगा जिसका अभाव मैं अनुभव कर रहा हूं। यही नहीं अपितु इस तारा साधना के द्वारा मैं अपनी जन्म जन्म की दरिद्रता समाप्त कर सर्वथा ऋण मुक्त हो कर पूर्ण वैभव युक्त जीवन व्यतीत करूंगा।

साधक इस दिन एक समय भोजन करे, भोजन में भी वह सात्विक आहार ले, और ब्रह्मचर्य का पालन करे। यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, और इसमें चार घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता।

तारा यंत्र

यों तो तारा यंत्र कई ग्रन्थों में स्पष्ट किया हुआ है, परन्तु स्वामीजी के अनुसार इस प्रकार के यंत्रों पर तारा सिद्ध सरलता से सम्पन्न नहीं हो पाती। यदि नाथवासर क्रम से तारा यंत्र का निर्माण हो और भूपुर चक्र के द्वारा उसका निर्माण हो, फिर त्रिवृत के अनुसार उसका अंकन कर षोडश दल का निर्माण करे, और चतुर्दशार रूप से यंत्र निर्माण कर अष्टार चक्र में भगवती तारा को स्थापित करे।

वास्तव में ही इस प्रकार की विधि से निर्मित यंत्र सामान्य यंत्र नहीं होता, अपितु सही शब्दों में कहा जाय तो ऐसा यंत्र 'यंत्रराज' कहलाता है। ऐसे यंत्र के दर्शन भी अपने आपमें दुर्लभ है। जिसके घर में ऐसा यंत्र स्थापित होता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है। वास्तव में ही इस प्रकार से यंत्र का निर्माण और उसका स्थापन अपने आप में ही महत्वपूर्ण है।

ऐसा यंत्र सोने पर, चांदी पर या ताम्र पत्र पर अंकित कर उसमें समस्त त्रिपुर सुन्दरी सहित ३६० शक्तियों का आह्वान करें, और पूर्ण मंत्र सिद्ध कर उसे प्रभाव युक्त बनावे। ऐसा ही यंत्र साधना में उपयुक्त रहता है, और ऐसे ही यंत्र के द्वारा इस प्रकार की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

जिस दिन साधना सम्पन्न करनी हो, उस दिन साधक पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने लाल रेशमी वस्त्र किसी लकड़ी के बाजोट पर बिछा दे और उस पर पुष्प की पंखुड़ियां बिखेर कर इस यंत्र राज को स्थापित कर दे।

साधना रहस्य

साधक लाल धोती या गुलाबी धोती पहिन कर बैठे और लाल आसन ही बिछा दे। इसके बाद एक अलग पात्र या थाली को दूसरे बाजोट पर रख कर उसके मध्य में कुंकुम से 'श्री तारायै नमः' लिखकर उस पर इस यंत्र को स्थापित कर दें और फिर जल मिश्रित दूध से धीरे धीरे जल चढ़ाता हुआ, यंत्र को स्नान करावे। दूध

मिश्रित जल चढाते समय निम्न महादेवियों का उच्चारण करे और प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ नमः जोड़ ले।

१- नित्यायै नमः २- जगन्मूर्त्यै, ३- देव्यै, ४- भगवत्यै, ५- महा-भार्यायै ६- प्रसन्नायै, ७- वरदायै, ८- मुक्ति-दायिन्यै, ९- परमायै, १०- हेतु-भूतायै, ११- हरि-नेत्र-कृतालयायै, १२- विश्वेश्वर्यै, १३- जगद्-धात्र्यै १४- स्थिति कारिण्यै, १५- संहार कारिण्यै, १६- निद्रायै १७- भगवत्यै, १८- अतुलायै, १९- तेजसां निध्ये, २०- स्वाहायै, २१- स्वधायै, २२- वषट्-कारायै, २३- स्वरात्मने, २४- सुधायै, २५- अक्षरायै, २६- त्रिधा-मात्रात्मिकायै, २७- अर्ध-मात्रायै (अर्ध-मात्रा-त्मिकायै), २८- स्वर-स्वरूपिण्यै, २९- अनुच्चार्यायै, सन्ध्यायै, ३०- सावित्र्यै, ३१, जनन्यै, ३२- परायै, ३३- सृष्टि-रूपायै, ३४- जगद्-योन्यै ३५-दिव्यायै, ३६-कार्यै, ३७-सिद्धये, ३८-वृद्धये, ३९-दिव्यायै, ४०-वर प्रदायै।

इसके बाद साधक उस यंत्र को अलग ले कर भली प्रकार से शुद्ध वस्त्र से पोंछ ले और दूसरे किसी पात्र के मध्य में "ह्रीं" अक्षर अष्ट गन्ध से लिख कर उस पर इस यंत्र को स्थापित करे और फिर पूर्ण श्रद्धा के साथ अष्ट गन्ध से ही इस यंत्र पर निम्न नामों के साथ "नमः" शब्द लगा कर चालीस बिन्दियां अष्ट गन्ध से लगावे। प्रत्येक बिन्दी लगाते समय निम्न एक नाम का उच्चारण करते हुए ये चालीस बिन्दियां लगावे।

१- इन्दु रूपिण्यै, २- सुखायै, ३- कल्याण्यै, ४- ऋद्ध्यै, ५- सिद्ध्यै, ६- कूर्मिकायै, ७- नैऋत्यै, ८- भूभृतां लक्ष्म्यै (भूभृद्-लक्ष्म्यै), ९- शर्वाण्यै, १०- दुर्गायै ११- दुर्ग-पारायै, १२- सारायै, १३- सर्व-कारिण्यै, १४- क्षान्त्यै (ख्यात्यै), १५- कृत्स्नायै, १६- धूम्रायै १७- अति-सौम्यायै, १८- अति-रौद्रिण्यै, १९- जगत्-प्रतिष्ठायै २०- कृष्णायै (कृत्स्नायै), २१- विष्णुमायायै, २२- चैतनायै, २३- बुद्धि रूपायै, २४- निद्रा-रूपायै, २५- क्षुधा-रूपायै, २६- ज्ञानारूपायै, २७- शक्तिरूपायै, २८- तृष्णा-रूपायै, २९- क्षान्ति-रूपायै, ३०- जाति-रूपायै, ३१- लज्जा, रूपायै, ३२- शान्ति रूपायै, ३३- श्रद्धा-रूपायै, ३४- कान्ति-स्वरूपिण्यै (कान्ति-रूपायै), ३५- लक्ष्मी-रूपायै, ३६- वृत्ति-रूपायै, ३७- धृति-रूपायै, ३८- स्मृति-रूपायै, ३९- दया रूपायै, ४०- सृष्टि-रूपायै।

अष्ट गन्ध से चालीस बिन्दियां लगाने और इन चालीस महाशक्तियों का पूजन करने के बाद यंत्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे और धूप या अगरबत्ती प्रज्वलित करें।

फिर यंत्र पर पुष्प समर्पित करे, और पुष्प माला पहिनाये, साथ ही यन्त्र के सामने घर पर बनाया हुआ प्रसाद समर्पित करे। प्रत्येक नाम के आगे साधक 'नमः' शब्द को जोड़ कर पुष्प समर्पित करे, इसमें किसी भी प्रकार के पुष्पों का प्रयोग किया जा सकता है।

१- बीज-एवरूपिण्यै, २- सम्मोहिन्यै, ३- विद्यायै, ४- स्वर्ग-प्रदायिन्यै. ५- मुक्ति-प्रदायिन्यै, ६- अशेष-जन-हृत्-संस्थायै, ७- नारायण्यै, ८- शिवायै, ९- कला-काष्ठादि-रूपायै, १०- परिणामप्रदायिन्यै, ११- सर्व-मंगल-मांगल्यै, १२- शिवायै, १३- सर्वार्थ-साधिकायै, १४- शरण्यायै, १५- त्र्यम्बिकायै, १६- गौर्यै, १७- सृष्ट्यात्मिकायै। १८- स्थित्यात्मिकायै, १९- लयात्मिकायै, २०- शक्त्यै, २१- सनातन्यै, २२- गुणाश्रयायै २३- गुणमयायै, २४- नारायण-स्वरूपिण्यै, २५- शरणागत-परित्राण-परायणायै, २६- दीन-परित्राण-परायणायै, २७- आर्त-परित्राण-परायणायै, २८- सर्वस्यार्ति-हरायै, २९- देव्यै, ३०- विष्णु-रूपायै, ३१- परात्परायै, ३२- हंस-युक्त-विमानस्थायै, ३३- ब्रह्माणी-रूप-धारिण्यै, ३४- कोशाम्भी-धारिण्यै, ३५-क्षुरिका-धारिण्यै, ३६-शूलधारिण्यै, ३७- चन्द्र-धारिण्यै, ३८- अहि-धारिण्यै, ३९- वर-धारिण्यै, ४०- महा-वृषम-संरूढायै।

इस प्रकार पुष्प समर्पण करने के बाद साधक उसी आसन पर बैठे बैठे तारा के परम गोपनीय मंत्र की

सोलह माला मंत्र जाप करे।

तारा माला

स्वामी जी के अनुसार इस प्रकार की साधना में विशेष १०८ मनकों से सज्जित तारा माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, जिसका प्रत्येक मनका मन्त्र सिद्ध हो, इन मनकों में आठ मनके अष्ट सिद्धि मन्त्रों से, नौ मनके नव निधि सिद्धियों से और ९१ मनके देव सिद्धि मन्त्र से आपूरित हो, इस प्रकार प्रत्येक मनका एक विशेष सिद्धि से आपूरित होता है, इसलिए इस प्रकार की माला अत्यन्त सौभाग्यदायक और शीघ्र सिद्धि प्रदायक मानी गई है।

इस माला की सबसे पहले साधक पूजा करे, सुमेरु पर केसर का तिलक करें, और बाद में प्रत्येक मनके पर केसर का तिलक कर उन पर अक्षत और पुष्प समर्पित करें, तत्पश्चात् हाथ में जल ले कर साधक उच्चारण करे, कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक तारा सिद्धि के लिए मन्त्र जप संपन्न कर रहा हूं, और यह साधना मैं भगवती तारा को प्रसन्न करने के लिए तथा जीवन में स्वर्ण, भोग, वैभव एवं सौभाग्य प्राप्त करने के लिए सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल किसी पात्र में छोड़ दें।

इसके बाद साधक तारा माला से निम्न मन्त्र की सोलह माला मन्त्र जाप वहीं बैठे बैठे सम्पन्न करें।

तारा मन्त्र

॥ ऐं ओं ह्रीं क्रीं हूं फट् ॥

उपरोक्त मन्त्र का जाप पूरी आस्था और विश्वास के साथ सम्पन्न करें, मन्त्र जप करते समय साधक की दृष्टि सामने रखे हुए यन्त्र के मध्य में होनी चाहिए।

मंत्र जप पूरा होने के बाद यदि स्मरण हो तो तारा की अथवा भगवती लक्ष्मी की आरती सम्पन्न करें, और घर के सदस्यों को प्रसाद वितरित करें, इसके बाद किसी कुंवारी कन्या को अथवा किसी ब्राह्मण को भोजन संपन्न करावे, और उसे यथोचित दान-दक्षिणा दे कर इस साधना की संपन्नता अनुभव करें, ऐसा करने पर यह साधना सम्पन्न होती है।

वास्तव में ही यह गोपनीय साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और यह साधना करने से साधक की समस्त कामनाएं पूर्ण होती है, वह इस लोक में सभी भोगों को प्राप्त कर अन्त में देवी की सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है। 卐

तारा की नौ कलाएं

तारा साधना सम्पन्न करने पर भगवती लक्ष्मी से सम्बन्धित निम्न नौ सिद्धियां या नौ कलाएं स्वतः साधक के साथ हो जाती है।

१. विभूति– विभूति का तात्पर्य निरन्तर उन्नति और गरीबों की सहायता करने का गुण स्वतः ही साधक के जीवन में आ जाता है।
२. नम्रता– ऐसी साधना करने पर यह गुण स्वतः ही आ जाने से व्यक्ति की प्रशंसा होने लगती है।
३. कान्ति– इससे साधक के चेहरे पर भव्यता और प्रभाव उत्पन्न हो जाता है।
४. तुष्टि– ऐसा साधक कभी भी अपुत्रवान नहीं रहता और पूर्ण पारिवारिक सुख मिलता है।
५. कीर्ति– तारा सिद्ध करने वाले की कीर्ति चारों ओर फैलने लगती है।
६. सिद्धि– इससे साधक कई विभिन्न साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करता है।
७. पुष्टि– ऐसा साधक सभी दृष्टियों से पुष्ट, स्वस्थ व उन्नतिप्रद बना रहता है।
८. सृष्टि– तारा सिद्ध करने पर साधक नवीन सिद्धियों को जन्म देने वाला बन जाता है।
९. ऋद्धि– साधना पूर्ण होने पर उसके घर में सभी प्रकार से उन्नति होने लगती है, और वह पूर्ण रूप से विद्वान, धनवान और कीर्तिवान बन जाता है।

गोपनीय एवं महत्वपूर्ण

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए साबर मंत्र सिद्धि

दीपावली का पर्व लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्रेष्ठतम पर्व है, इस अवसर पर आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि एवं लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित साधक अपनी साधनाएं सम्पन्न करते हैं, परन्तु इन सारी साधनाओं में साबर साधनाएं अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं शीघ्र प्रभाव पूर्ण होती है।

नीचे कुछ महत्वपूर्ण एवं गोपनीय साबर साधनाएं प्रस्तुत कर रहा हूं, जो कि पाठकों के लिए अत्यधिक सहायक होगी।

दीपावली जन जीवन का एक महत्वपूर्ण और विशेष पर्व है, इन दिनों गृहस्थ साधक कुछ ऐसी साधनाएं सिद्ध करना चाहते है, जो कि आर्थिक व्यापारिक दृष्टि से अत्यधिक अनुकूल होती है, इस वर्ष दीपावली २९ अक्टूबर १९८९ को है, परन्तु नवरात्रि के प्रारम्भ से लगाकर कार्तिक शुक्ला पंचमी तक का समय लक्ष्मी साधना से सम्बन्धित महत्वपूर्ण समय कहलाता है, इस दृष्टि से नवरात्रि ३० सितम्बर से प्रारम्भ हो रही है, और इस तारीख से ३ नवम्बर तक का समय लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं — विशेषकर साबर साधनाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

साधकों को चाहिए कि वे इस समय का सदुपयोग करें, और निम्न साधनाओं में से एक दो साधनाएं तो अवश्य ही सम्पन्न करें, जिससे कि वे अपने जीवन में इन मन्त्रों का प्रभाव अनुभव कर सकें और साथ ही साथ

ऐसी साधनाएं सम्पन्न कर लाभ उठा सकें ।

१- स्वर्णावती साधना

(आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए बेजोड़ प्रयोग)

यह तीन दिन का प्रयोग है, और किसी भी बुधवार से प्रारम्भ किया जा सकता है ।

जो साधक इस प्रयोग को करना चाहता है, उसे चाहिए, कि वह बुधवार की रात्रि को लगभग ९ बजे उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, पीले रंग का आसन बिछा ले, और स्वयं भी पीली धोती पहिनकर बैठे ।

सामने लक्ष्मी का चित्र और मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सियार सिंगी रख दे, यह अपने आप में एक अद्वितीय वस्तु होती हैं, जो कि इस प्रकार के प्रयोग के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण देखी गई है ।

सियार सिंगी को किसी पात्र में रखकर उस पर केसर का तिलक करे और फिर सामने अगरबत्ती व दीपक लगा ले, दीपक तेल का होना चाहिए ।

ऐसा करने के बाद साधक शंख माला से या स्फटिक माला से निम्नलिखित मन्त्र की २१ मालाएं फेरे ।

यह मन्त्र पूर्ण प्रभावयुक्त और अपने आप में अद्वि-है, तथा कई साधकों ने इसका प्रयोग किया है ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वर्णावती ममगृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ नमः ।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब वह माला सियार सिंगी पर पहना दे, दूसरे दिन भी इसी प्रकार रात्रि को मन्त्र जप करे, तीन दिन तक ऐसा प्रयोग करने पर वह सियार सिंगी और साधना सिद्ध हो जाती है, तब उस सियार सिंगी को किसी अलग डिब्बी में रखदे ।

२-कनकावती साधना

(व्यापार वृद्धि के लिए आश्चर्यजनक साधना)

नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक इस प्रयोग को किया जा सकता है जो भी व्यक्ति व्यापार करता हो या व्यापार में रुचि रखता हो अथवा मन में व्यापार प्रारम्भ करने की इच्छा हो, उसे अवश्य ही इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए ।

इस प्रयोग से वर्तमान में व्यापार से संबंधित बाधाएं दूर होती है, तथा निकट भविष्य में ही व्यापार में सफलता मिलने की सम्भावना बढ़ जाती है ।

यह तीन दिन का प्रयोग है, और किसी भी बुधवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है ।

प्रातः काल उठकर स्नान कर पीले वस्त्र पहिन कर अपने सामने पात्र में "कनकावती यन्त्र" रख दे, जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, उस पर केसर से तिलक करे, सामने अगरबत्ती दीपक लगावे, और लक्ष्मी माला अथवा शंख माला से ११ मालाएं निम्न मन्त्र की फेरे ।

यह मन्त्र अपने आप में बेजोड़ है, और इसके माध्यम से व्यापारियों को आश्चर्यजनक सफलता मिली है, मंत्र निम्न प्रकारेण है–

मन्त्र

ॐ दारिद्रय विनाशिनो अष्टलक्ष्मी कनकावती सिद्धि देहि देहि नमः

इस प्रकार तीन दिन तक इस मंत्र का जप करे, तत्पश्चात् इस यंत्र को अपनी दुकान में या फैक्ट्री में स्थापित कर दे, और दीपावली तक नित्य इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे तो निश्चय ही उसे व्यापार में

सफलता मिलती है, और निरन्तर उन्नति होती है।

३- भाग्य लक्ष्मी प्रयोग

(समस्त प्रकार से भाग्योदय के लिए अतुलनीय प्रयोग)

यह साधना एक महत्वपूर्ण और सफलतादायक साधना है, तथा प्रत्येक साधक के लिए यह आवश्यक है, क्योंकि इस साधना को सम्पन्न करने पर जीवन में जो इच्छा होती है, वह सम्पन्न होती है, तथा उसे सफलता मिलती है, नौकरी में प्रमोशन, उन्नति 'आर्थिक सफलता, भाग्योदय आदि अनेक कार्यों में यह प्रयोग सफलतादायक कहा गया है।

नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक किसी भी दिन इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है, यह केवल तीन दिन का प्रयोग है, और साधक को चाहिए कि पीले वस्त्र पहन कर प्रातःकाल साधना के लिए बैठ जाय और सामने "लक्ष्मी फल" रख तत्पश्चात उस लक्ष्मी फल पर केसर का तिलक कर सामने तेल का दीपक अगरबत्ती लगाकर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का जप प्रारम्भ करे, इसमें नित्य नौ मालाएं फेरने का विधान है।

मन्त्र

ॐ नमः भाग्य लक्ष्मी च विद्महे अष्ट लक्ष्मी च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।

इस प्रकार तीन दिन प्रयोग सम्पन्न करने के बाद उस लक्ष्मी फल को किसी पवित्र स्थान पर रख दे और नित्य उसके दर्शन करे उसके बाद ही काम पर जावे, ऐसा करने पर शीघ्र ही भाग्योदय होता है, और उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती हैं।

वस्तुतः यह प्रयोग सर्व सिद्धिदायक एवं पूर्ण प्रभावयुक्त माना गया है।

४. फेत्कारिणी प्रयोग

(किसी भी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग आदि को दूर करने की सफल साधना

शत्रु और ईर्ष्यालु दूसरों की उन्नति नहीं देख सकते जब वे परिश्रम कर उस प्रकार से सफलता प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाते तब वे किसी अन्य उपाय से उसको नुकसान पहुंचाने की चेष्टा करते है, इसमें वे तंत्र मंत्र का सहारा लेते है, और इसके माध्यम से व्यक्ति को बीमार बना लेना, घर में निरन्तर कलह रहना, पति पत्नी में मतभेद, परिवार के सदस्यों की अकाल मृत्यु, व्यापार में हानि होना समय पर कार्य सम्पन्न न होना भाग्योदय में बाधाएं आदि प्रयोगों से व्यक्ति का जीवन छिन्न भिन्न हो जाता है।

ऐसी स्थिति में यह प्रयोग राम बाण की तरह कार्य करता है, इस प्रयोग को करने से यदि उस पर या उसके सदस्यों पर अथवा व्यापार पर किसी प्रकार का कोई प्रयोग किया हुआ होता है, तो वह दूर हो जाता है, और उसकी वापिस उन्नति होने लग जाती है।

मेरी राय में तो यह प्रयोग प्रति वर्ष साधकों को कर लेना चाहिए जिससे कि किसी प्रकार की कोई विपत्ति या बाधा न रहे, यह प्रयोग मात्र तीन दिन का है, किसी भी शनिवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए, प्रातःकाल उठकर स्नान सन्ध्यादि से निवृत्त होकर सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त तांत्रिक नारियल रख दे, और उस पर कुंकुम से तिलक करे और फिर हाथ में जल लेकर कहे कि मैं यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं, मुझ पर मेरे घर पर या मेरे परिवार अथवा व्यापार पर किसी प्रकार का दोष, तांत्रिक प्रयोग या पितृ दोष आदि हो तो वह समाप्त हो जाय और मेरी पुनः उन्नति प्रारम्भ हो।

तत्पश्चात श्री माला से निम्न मन्त्र की ११

मालाएं फेरे—

मन्त्र

ॐ क्लीं मम समस्त शत्रूणां दोषान् निवारय क्लीं फट् स्वाहा ।।

इस प्रकार तीन दिन तक मंत्र प्रयोग करे और उसके बाद वह माला और तांत्रिक नारियल घर के बाहर स्थान पर गड्ढा खोदकर जमीन में गाड़दे।

ऐसा करने पर वह दोष दूर हो जाता है, और उसके जीवन में पुनः उन्नति होने लग जाती है, यह प्रयोग अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इससे साधक को और उसके परिवार को सफलता मिलने लगती है।

५. अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग

(जीवन में समस्त प्रकार की उन्नति के लिए श्रेष्ठ साधना)

जीवन में स्वस्थ शरीर, बैंक बेलेन्स, साहस, शक्ति, भवन, संतान पत्नी सुख, दीर्घायु, भाग्योदय, व्यापार वृद्धि, नौकरों में उन्नति, विदेश यात्रा और अन्य कई प्रकार की पूर्ति को 'अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग' कहा जाता है।

प्रत्येक साधक को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि इस प्रयोग को सम्पन्न करने से जीवन में साधक सभी प्रकार से उन्नति करने में सक्षम हो पाता है, तथा पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है।

नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है, यह प्रयोग मात्र तीन दिन का है, और अपने आप में आश्चर्यजनक सफलता देने में सहायक है।

किसी भी बुधवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है, प्रातःकाल उठकर साधक स्नान आदि कर सामने किसी पात्र "अखण्ड लक्ष्मी यन्त्र,, रख दे, जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, फिर जल से स्नान कर यन्त्र को पोंछे और उस पर केसर से तिलक करे, इसके बाद स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का जप करे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं अष्ट लक्ष्म्यै नमः ।

नित्य ११ मालाएं फेरनी आवश्यक है, इस प्रकार तीन दिन तक इस मंत्र का जप करे, जप साधना संपन्न हो जाय तो इस यन्त्र को घर में अच्छे स्थान पर या अपनी तिजोरी में रख दे, ऐसा करने पर साधना संपन्न होती है, और उसे जीवन में पूर्ण भौतिक तथा सभी प्रकार के सुख प्राप्त होने लगते है।

वास्तव में ही यह साधना उच्चकोटि की साधना है, और प्रत्येक साधक को इस समय का उपयोग करना चाहिए, और इससे लाभ उठाना चाहिए।

ऊपर मैंने कुछ साधनाएं पाठकों के हितार्थ प्रस्तुत की है, जो मेरे जीवन का अनुभव रहा है, और मैंने यह महसूस किया है, कि ये साधनाएं व्यक्ति के जीवन को उन्नति की ओर ले जाने में पूर्ण रूप से सहायक है।

साधकों को चाहिए, कि वे नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक के समय का पूरा-पूरा उपयोग करें, इतने महत्वपूर्ण समय को हाथ से न जाने दे, और इसमें से कोई भी साधना सम्पन्न कर जीवन को सुखदायक, यशस्वी उच्च, पूर्ण एवं सफलतायुक्त बनावे।

दीपावली की रात्रि को किये जाने वाले महत्वपूर्ण गोपनीय प्रयोग

— सिद्धानन्द

दीपावली की रात्रि प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्व-पूर्ण होती है, कुछ लोग लक्ष्मी पूजन कर इस पर्व को मनाते है, तो कुछ इस रात्रि को जुआ खेलकर अपने भाग्य की आजमाइश करते है, और कुछ इस रात्रि को विशेष साधनाएं सम्पन्न कर जीवन में पूर्ण आर्थिक व्या-पारिक सफलता प्राप्त करते है।

नीचे मैं कुछ ऐसे महत्वपूर्ण गोपनीय प्रयोग पहली बार प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण है, अभी तक ये प्रयोग सर्वथा गोपनीय रहे है, और किसी पुस्तक में इस प्रकार के प्रयोग दिखाई नहीं दिये क्योंकि इस प्रकार के प्रयोग व्यक्तिगत रूप से ही गुरू द्वारा अपने गृहस्थ शिष्यों को प्राप्त होते रहे है. परन्तु ये प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण और शीघ्र प्रभावोत्पादक है, मैंने कई गृहस्थ शिष्यों और साधकों से ये प्रयोग सम्पन्न कराये है, और उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई है।

साधकों को चाहिए, कि वे इनमें से एक या दो प्रयोग तो अवश्य ही सम्पन्न करे, क्योंकि इस प्रकार का महत्वपूर्ण पर्व पुनः एक साल भर बाद ही प्राप्त होता है, अतः प्रयोगकर्ता को पहले से ही तैयारी कर लेनी चाहिए और इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

१. आश्चर्यजनक व्यापार वृद्धि प्रयोग

यह प्रयोग दीपावली की रात्रि को सम्पन्न किया जाता है, इस वर्ष इस प्रयोग के लिए रात्रि को सूर्यास्त से १० बजकर २७ मिनट तक का समय विशेष महत्वपूर्ण है, यदि इस समय में यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो निश्चय हीं व्यापार वृद्धि में विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

सामग्री

जल, पात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक, व्यापार सिद्धि यन्त्र, केसर।

मन्त्र

ॐ ह्रीं धनधान्य समृद्धि दरिद्रविनाशिनी महालक्ष्मी मम गृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ॐ नमः।

विधि

साधक या प्रयोगकर्ता आसन बिछाकर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने पात्र में 'व्यापार सिद्धि यन्त्र' रख दे, पहले उसे जल से धो ले, फिर पोंछकर उस पर केसर का तिलक करे और सामने स्थापित कर उसके सामने दूध का बना प्रसाद रखे और अगरबत्ती तथा घी का दीपक प्रज्जवलित करे, फिर शंख माला से उपरोक्त मन्त्र की पांच मालाएं फेरे——

इसके बाद प्रातःकाल होने पर इस यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में, दुकान पर अथवा फैक्ट्री में स्थापित कर दे।

ऐसा करने पर उसके व्यापार में निरन्तर उन्नति होती रहती है, और जब तक वह यन्त्र दुकान में कार्यालय या फैक्ट्री में अथवा घर में स्थापित रहेगा तब तक उसे निरन्तर सफलता प्राप्त होती रहेगी।

यह प्रयोग आज़माया हुआ है, और इस प्रयोग से सैकड़ों लोगों ने आश्चर्यजनक लाभ उठाया है।

२. जुए में जीतने का प्रयोग

दीपावली की रात्रि को कहीं-कहीं पर जुआ खेलने का प्रचलन है, प्राचीनकाल में भी रात्रि को जुआ खेलने का विधान था, प्राचीन ग्रन्थ में इससे संबंधित जो प्रयोग प्राप्त हुआ है, वह मैं पाठकों के लाभार्थ दे रहा हूं——

सामग्री—

जल, पात्र, केसर, लघु नारियल, (मन्त्र सिद्ध) नैवेद्य अगरबत्ती, दीपक।

मन्त्र

ॐ क्लीं पिशाचि आकस्मिक धन देहि-देहि फट् स्वाहा।

दीपावली के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करने का सबसे अच्छा समय प्रातः १० बजकर २ मिनट से ११ बजकर १४ मिनट तक का है, यह प्रयोग दिन में करने के लिए है।

सर्व प्रथम साधक सामने किसी पात्र में लघु नारियल स्थापित कर दे, और उस पर कुंकुम या केसर का तिलक करे फिर उसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे कि मैं अमुक नाम का व्यक्ति यह महत्वपूर्ण प्रयोग जुए में सफलता प्राप्ति के लिए कर रहा हूं।

फिर विजया की माला से उपरोक्त मन्त्र का जप करे और नौ मालाएं फेरे, ऐसा करने के बाद जब जुआ खेलने के लिए जावे तब उस लघु नारियल को अपनी जेब में रखकर जावे।

ऐसा करने पर उसे जुएं में सफलता मिलती है, और वह विशेष आर्थिक लाभ प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है।

यह प्रयोग महत्वपूर्ण कहा गया है, और अनुभव यह रहा हैं, कि इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर साधक को आकस्मिक रूप से धन लाभ एवं सफलता प्राप्त होती है।

३. स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और प्रत्येक साधक को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, इस प्रयोग को सिद्ध करने पर आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त होती है, और उसे जीवन में किसी भी दृष्टि से असफलता या परेशानी नहीं रहती।

सामग्री—

मोती शंख, केसर, जलपात्र, अगरबत्ती, दीपक लाल वस्त्र।

मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं महालक्ष्मी धनदा यक्षिणी कुबेराय मम गृहे स्थिरो ह्रीं ॐ नमः।

इस वर्ष इस प्रयोग को सम्पन्न करने का समय दोपहर को २ बजे से ३ बजकर २५ मिनट के बीच है, यह समय इस दृष्टि से अत्यधिक सफलतादायक है।

साधक अपने सामने लाल वस्त्र बिछाकर उस पर मोती शंख रख दे, जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा

युक्त हो और उस पर केसर से स्वस्तिक बना ले तथा कुंकुम से तिलक कर दे।

ऐसा करने के बाद स्थिर माला से उपरोक्त मन्त्र की तीन मालाएं फेरे, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है, मंत्र प्रयोग पूरा होने के बाद लाल वस्त्र में शंख को बांध कर घर में किसी अच्छे स्थान पर रख दे, जब तक वह शंख घर में रहेगा तब तक उसके जीवन में निरन्तर उन्नति होती रहेंगी।

वास्तव में यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और इस वर्ष तो एक विशेष योग दीपावली के दिन निर्मित हुआ है, अतः उपरोक्त बताये हुए समय में यदि यह प्रयोग सिद्ध किया जाय तो आर्थिक दृष्टि से विशेष सफलता दायक कहा जा सकता है।

४. दरिद्रता विनाशक प्रयोग

यह प्रयोग भी दीपावली के दिन ही सम्पन्न करने का विधान है, प्रातः जल्दी उठकर इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए, इस वर्ष ज्योतिष की दृष्टि से प्रातः ६ बजकर ५ मिनट से ६ बजकर ५५ मिनट तक का समय इस प्रयोग के लिए विशेष महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

सामग्री—

दारिद्रय विनाशक तंत्र फल (मन्त्र-सिद्ध), जल पात्र अगरबत्ती, घी का दीपक।

मन्त्र

ॐ क्रीं तालिके दरिद्र विनाशिन्यै हुं फट्।

विधि—

सर्व प्रथम साधक पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय सामने किसी पात्र में मन्त्र सिद्ध दरिद्रता विनाशक तंत्र फल रख दे और उस पर केसर से अपना नाम लिख दे फिर उपरोक्त मन्त्र की पांच मालाएं फेरे इसके लिए मूंगे की अथवा स्फटिक की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब प्रयोगकर्त्ता स्वयं उस दरिद्रता विनाशक तंत्र फल को दक्षिणा के साथ किसी गरीब या भिखारी को दान में दे दे, कहा जाता है, कि ऐसा करने से उस तंत्र फल के साथ ही साथ दरिद्रता भी दान में चली जाती है, और उसके घर में भविष्य में किसी प्रकार की दरिद्रता का वास नहीं रहता।

यदि भिखारी नहीं मिले तो प्रयोगकर्ता स्वयं किसी मन्दिर में जाकर दक्षिणा के साथ उस तंत्र फल को भेंट कर दे।

इस प्रकार करने से उसके जीवन में यदि कोई ग्रह बाधा या अन्य किसी प्रकार की कोई अशुभ बाधा योग होता है, तो वह समाप्त हो जाता है, उसके घर से दरिद्रता हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और प्रत्येक साधक को चाहिए कि इस दीपावली के अवसर पर इस प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करे।

५. गृह सुख प्रयोग

यह भी दीपावली के दिन ही करने का प्रयोग है, गृहस्थ में किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी हो, पति पत्नी में मतभेद, तनाव, पुत्र का आज्ञाकारी न होना या पुत्र को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त न होना, घर में संतान न होना या अन्य किसी भी प्रकार की गृहस्थ बाधा हो तो इस प्रयोग से दूर की जा सकती है।

इस वर्ष प्रयोग को सम्पन्न करने का श्रेष्ठ समय दिन को १२ बजे से १२ बजकर ४७ मिनट तक का समय है, इस अवधि में इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

सामग्री—

गृहस्थ बाधा निवृत्ति यन्त्र, दीपक, अगरबत्ती।

मन्त्र

ॐ श्रीं मम गृहे तुष्टिं भव कंकावत्यै शिरो भव फट् स्वाहा।

विधि—

साधक ठीक १२ बजे आसन पर बैठ जाय और मन में यह चिन्तन करे कि मैं यह प्रयोग गृहस्थ की सभी बाधाओं को दूर करने के लिए कर रहा हूं, तत्पश्चात् हिल्ली की माला से उपरोक्त मन्त्र की इस अवधि में ही तीन मालाएं फेरे--

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब उस गृहस्थ यन्त्र को अपने घर में तिजोरी अथवा अलमारी में किसी डिब्बी में बन्द कर के रख दे, जब तक वह यन्त्र घर में रहेगा, तब तक उस घर में किसी प्रकार का कलह या गृहस्थ से सम्बन्धित परेशानियां नहीं आयेगी।

वास्तव में ही यह प्रयोग कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है, और साधकों को चाहिए कि वह दीपावली के दिन विशेष योग में यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करे, ऐसा प्रयोग सम्पन्न होने से उसके जीवन में सभी प्रकार की उन्नति होगी और वह जीवन में पूर्ण गृहस्थ सुख भोगता हुआ जीवन यापन करने में समर्थ हो पाता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग गोपनीय होने के साथ साथ महत्वपूर्ण रहा है, और कई साधकों तथा गृहस्थ लोगों ने इस प्रयोग से लाभ उठाया है।

६. सर्वोन्नति प्रयोग

यह प्रयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, कर्जा उतारने, रकम कहीं रुक गई हो तो उसे प्राप्त करने, व्यापार वृद्धि नौकरी में प्रमोशन, आर्थिक उन्नति, रोग मुक्ति आदि, सभी कार्यों और उन्नति में यह प्रयोग लाभदायक रहा है।

सामग्री—

सर्व कामना सिद्धि यन्त्र, जल पात्र, अगरबत्ती घृत का दीपक।

मन्त्र

ॐ महायक्षाय मम सर्वोन्नति सिद्धि देहि दापय स्वाहा।

विधि—

साधक को चाहिए कि वह इस समय में उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने दीपक, अगरबत्ती लगा ले, फिर रूद्राक्ष की माला से उपरोक्त मन्त्र की तीन मालाएं फेरे।

मन्त्र जप पूरा होने पर वह यन्त्र अपने घर के पूजा स्थान में रख दे और सम्भव हो सके तो रोज उसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे।

ऐसा करने पर उस प्रयोगकर्ता के जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति होती रहती है, और उसके रुके हुए कार्य पूरे हो जाते है, यदि उसका रुपया कहीं रूक गया हो और वापिस नहीं आ रहा हो तो धन प्राप्त हो जाता है, मुकदमें में सफलता, किरायेदार से मुक्ति और किसी प्रकार के कार्य सिद्धि में यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल और महत्वपूर्ण माना है।

प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस विशेष अवसर इस प्रयोग को सिद्ध करे जिससे कि वह जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति कर सफलता प्राप्त कर सके।

ऊपर मैंने कुछ प्रयोग दिये है, जो सर्वथा गोपनीय और विशेष महत्वपूर्ण है, यदि साधक इन प्रयोगों को दीपावली के अवसर पर प्रयोग कर लाभ उठाते है, तो वास्तव में ही वे जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त कर सफलता युक्त बन सकेंगे।

●●

धन-प्राप्ति के सिद्ध प्रयोग

धन का अर्थ मात्र रुपया–पैसा ही नहीं होता ,गृहस्थ साधक का धन उसकी कीर्ति यश-सम्मान-सभी कुछ होता है। धन के इस विस्तृत अर्थ को ध्यान में रखते हुये इस लेख में धन-प्राप्ति के कुछ विशेष प्रयोगों पर प्रकाश डाला गया है। ये प्रामाणिक और अनुभूत है। इनके विधि विधान सरल है अतः सामान्य गृहस्थ साधकों के लिए ये अत्यन्त उपयोगी है।

जीवन में धन प्राप्त करना कोई बुरा कार्य नही है। आवश्यकता इस बात की है कि जो धन प्राप्त किया जाय वह सही विधि से और समाज की दृष्टि से उचित कार्यों के द्वारा सम्पन्न हो।

प्राचीन काल से लक्ष्मी की पूजा प्रचलित रही है। लक्ष्मी का अर्थ केवल धन प्राप्त करना ही नही है, अपितु जीवन में पूर्ण उन्नति और सभी प्रकार से भौतिक प्रगति इसी के अन्तर्गत आती है। धन, धान्य पृथ्वी भवन कीर्ति आयु, यश, सम्मान, संचित सम्पति, वाहन, आदि को भी लक्ष्मी कहा गया है। अतः लक्ष्मी की उपासना से केवल धन प्राप्ति ही नही होती अपितु अन्य भौतिक सम्पदा भी इसके माध्यम से प्राप्त होती है।

इस लेख में मैं लक्ष्मी से संबंधित कुछ मन्त्र प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूँ जो कि अब तक गोपनीय रहे हैं, ये मन्त्र मुझे एक उच्च कोटि के साधक द्वारा प्राप्त हुए थे और मैंने अपने शिष्यों को इस प्रकार की साधनायें सिखाई है उन्होंने स्वयं के लिए व दूसरों के लिये।इस प्रकार के मन्त्रों का प्रयोग किया है तथा अपने जीवन में पूर्णतः सफल रहे हैं।

ये मन्त्र और विधियां प्रामाणिक हैं तथा इनके माध्यम से कोई भी साधक सफलता प्राप्त कर सकता है। इन प्रयोगों के द्वारा आर्थिक उन्नति, व्यापार-वृद्धि, तथा ऋण को समाप्त करने में शीघ्र तथा पूर्ण सफलता प्राप्त होती है, ये प्रयोग अनुभूत है, तथा श्रेष्ठ होने के साथ-साथ सरल है जिससे कि प्रत्येक गृहस्थ इनका लाभ उठा सकता है।

प्रयोग १

यह प्रयोग पांच दिन का है। यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। दीपावली के दो दिन पूर्व धनतेरस आती है। इस दिन भी इस प्रयोग को प्रारंभ किया जा सकता है। साधक को चाहिए को वह चांदी की थाली में अष्टदल बनावें। यह अष्टदल चन्दन या कुंकुम से बनाया जा सकता है,इस अष्टदल के ऊपर

चावलों से 'श्रीं' अंकित करें। साधक को सफेद धोती और सफेद वस्त्र पहन कर के बैठना चाहिए। सामने अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए और यदि संभव हो तो लक्ष्मी की मूर्ती रखी जा सकती है। निम्न मंत्र की १०८ माल यें नित्य जपनी चाहिए।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै गरुड़ वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा।

जब पांचवे दिन मालाऐं पूरी हो जाय तब साधक पांच कन्याओं को भोजन करावें और उन्हे वस्त्र आदि देकर सन्तुष्ट करें। इस प्रकार यह अनुष्ठान सम्पन्न किया जा सकता है। इससे पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त होता है

प्रयोग २

यह प्रयोग धन त्रयोदशी से पांच दिन आगे तक किया जाता है और इसमें रात्रि को ही यह मन्त्र जपा जाता है।

साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर उत्तर की तरफ मुंह करके बैठ जाय और नीचे लिखे मन्त्र की सात मालाऐं नित्य फेरे, परन्तु सूर्योदय से पूर्व तीन मालाऐं फेरनी आवश्यक है। इस प्रकार रात्रि को ९ बजे से ३ बजे तक ७ मालाऐं फेरें तथा सवेरे ५ बजे से ७ बजे के बीच तीन मालाऐं फेरे, इस प्रकार यह पांच दिन का प्रयोग है।

मन्त्र

ॐ सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वित।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय.॥

जब पांचवे दिन रात्रि को यह जप पूरा हो जाय तब प्रातः काल कमलगट्टे की १०८ आहुतियां उपरोक्त मन्त्र से दे, ऐसा करने पर उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से कोई अभाव नही रहता।

प्रयोग ३

यह प्रयोग भी दीपावली के अवसर पर सम्पन्न किया जाता है और दीपावली की रात्रि को इस मन्त्र की १०८ मालाऐं फेरनी चाहिए, इसमें कमलगट्टे की ही माला का प्रयोग किया जाता है। साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने लक्ष्मी की मूर्ति या चित्र स्थापित कर दे और उसकी विधि विधान से पूजा करे। उसे गुलाब का पुष्प व इत्र समर्पित करे तथा सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे।

इसके बाद निम्न मन्त्र की १०८ मालाऐं फेरे साधक का मुंह पश्चिम या उत्तर की तरफ होना चाहिए तथा उसे ऊनी वस्त्र के आसन पर बैठना चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रीं दारिद्रय विनाशने अष्टलक्ष्म्यै ह्रीं नमः।

साधक को चाहिए कि जब तक मालाएं पूरी न हो जाय तब तक अपने आसन से उठे नहीं। रात्रि को विशेष कर अर्द्ध रात्रि के बाद घुंघरुओं की आवाज आ सकती है या प्रत्यक्ष लक्ष्मी के दर्शन हो सकते है परन्तु उस समय भी साधक सतत मन्त्र का जप करता रहें, यदि उसे किसी प्रकार की आवाज सुनाई दे तब भी वह उसका उत्तर न दे और इस बात का ध्यान रखे कि उसके हाथ से माला न गिरे और न मन्त्र जप बन्द हो।

यह मन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली है, और कई लोगों ने इस मन्त्र जप से लाभ उठाया है। इसका प्रयोग दीपावली की रात्रि को ही किया जा सकता है।

मन्त्र जप करते समय कमलगट्टे की माला का प्रयोग हो, पर ऐसी माला मन्त्र प्राण प्रतिष्ठा युक्त एवं लक्ष्मी चैतन्य हो, इसके बाद जब कभी भी लक्ष्मी से सबंधित मन्त्र जप करे, बाद में भी इस मन्त्र का जप करे तो उसी कमल गट्टे की माला का प्रयोग हो।

मोती शंख पर मेरे असाधारण सफल प्रयोग

श्री स्वामी गिरिजेश्वरानन्द हिमालय के सिद्ध योगी सन्यासी साधु हैं ये निरन्तर भ्रमणशील ह, उन्होने अपने पूरे जीवन में जो भी अनुभव प्राप्त किये हं उन्हे कसौटो पर कसकर देखा है, और सन्तुष्ट होने पर ही, इन्होंने उनको प्रामाणिकता दी है।

पत्रिका पाठकों का सौभाग्य है कि उन्हे इनके ज्ञान का लाभ समय समय पर मिलता रहेगा, ऐसा आश्वासन स्वामी जी से प्राप्त हुआ है. हमें विश्वास है कि भविष्य में भी इनके द्वारा अनुभूत प्रयोग पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे।

आज मैं सत्तर साल से भी ज्यादा उम्र का हो गया हूं, और जब मैं मात्र ग्यारह वर्ष का था, तभी मैंने सन्यास की दीक्षा ले ली थी, उसके बाद मेरे जीवन का अधिकांश हिस्सा सन्यास की मर्यादाओं का पालन करने और हिमालय स्थित उच्च कोटि के सन्यासियों के साथ समय बिताने के साथ साथ ज्ञान प्राप्त करने जा रहा है।

जब पूज्य गुरूदेव ने मुझे दीक्षा दी, तो उन्होंने सबसे पहले यह कहा था, कि "तुम्हें भारत की दुर्लभ और श्रेष्ठ सामग्री पर शोध करना है, और यह ज्ञात करना है कि इन सामग्रियों पर किस प्रकार से साधना की जाय, किस विधि से अनुष्ठान सम्पन्न किये जांय और क्या इस प्रकार की विधियों से लाभ होता है या नहीं ? इन सारे तथ्यों की प्रामाणिक जानकारी भी तुम्हारे जीवन का लक्ष्य होनी चाहिए, और अपना पूरा जीवन इसी पर समर्पित करो"।

गुरू की आज्ञा का पालन करना मेरे जीवन का प्रमुख लक्ष्य रहा है, और गुरू दीक्षा के दिन से आज तक मैं उन दुर्लभ वस्तुओं पर प्रयोग करता रहा हूं, और इन प्रयोगों में मुझे आश्चर्यजनक अनुभव तथा सफलताएं प्राप्त हुई है।

मैंने सियार सिंगी, हत्था जोड़ी, एकाक्षी नारियल, श्वेतार्क गणपति और ऐसी सैकड़ों, हजारों देव दुर्लभ वस्तुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की, इससे सम्बन्धित जितने भी प्रामाणिक ग्रन्थ थे, उनको खंगाल डाला, जहां जहां से भी इनसे सम्बन्धित साधनाएं उपलब्ध हो सकती थी, उन साधनाओं को प्राप्त किया, और ऐसी हजारों

हस्तलिखित पुस्तकों को नोट किया, जिनसे इस प्रकार की सामग्री तथा सम्बन्धित अनुष्ठान विधि उपलब्ध थी।

यद्यपि भारतवर्ष में दक्षिणा वर्ती शंख का विशेष महत्व जन साधारण में व्याप्त है, परन्तु मोती शंख अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण शंख है, इसकी चमक मोती के समान होने के कारण ही इसे मोती शंख कहा जाता है, यह लगभग गोल आकार का सुन्दर, सुरम्य शंख होता है, जो कि अपने आप में कई विशेषताएं समेटे हुए है।

यह शंख छोटे, बडे कई साइजों में उपलब्ध होता है, यह प्रकृति का ही वरदान है, जो मनुष्यों को सहज ही प्राप्त है।

मैंने दक्षिणावर्ती शंख पर ही कई अनुष्ठान और प्रयोग किये है, और उनसे मुझे आशातीत सफलताएं मिली है, परन्तु मोती शंख में यह विशेषता है, कि इस पर प्रयोग करने से साधारण गृहस्थ को भी विशेष सफलताएं प्राप्त हो जाती है, यदि इस शंख की मैं विशेषताएं गिनाने बैठूं तो एक पूरा ग्रन्थ तैयार हो सकता है, इतने लम्बे समय के अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ, कि यह शंख लक्ष्मी का दूसरा स्वरूप ही है, और प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में इस प्रकार का शंख रखना चाहिए क्योंकि न मालूम कब इससे सम्बन्धित प्रयोग किसी साधु से प्राप्त हो जाय या किसी ग्रन्थ में पढ़ने को मिल जाय, अचानक और प्रयत्न करने पर इस प्रकार का शंख मिलना कठिन ही होता है।

मैं आगे के पृष्ठों में कुछ विशेप प्रयोग इस शंख पर दे रहा हूँ, मुझे विश्वास है कि ये प्रयोग गृहस्थ भाई बहिनों के लिए विशेप रूप से उपयोगी और सार्थक होंगे।

आयुर्वेदिक :

आयुर्वेद की दृष्टि से इस शंख का विशेष महत्व है, इस शंख की संरचना ही कुछ इस प्रकार से है कि इसमें जल रखने पर उस जल में शंख के संयोग से कुछ विशेष प्रतिक्रिया हो जाने से वह जल विशेष प्रभावयुक्त हो जाता है।

१– रात्रि को इस शंख में जल भर कर रख दें तथा प्रातःकाल इस जल को निकाल कर शरीर पर लगावें तो स्वतः ही चर्म रोग समाप्त हो जाते है।

२– इस प्रकार इस शंख में बारह घंटे जल भरकर वह जल यदि शरीर पर पाये जाने वाले सफेद दाग पर लगावें और ऐसा कुछ समय तक करें तो धीरे-धीरे ये सफेद दाग समाप्त हो जाते है, और नैसर्गिक शरीर से मेल खाती हुई चमड़ी वहां प्राप्त हो जाती है।

३– रात्रि को इस शंख में जल भर कर रख दें, तथा प्रातःकाल इस जल में कुछ गुलाब जल मिला दें, और उसे अपने बालों में लगावें तो धीरे-धीरे बाल काले हो जाते है, और स्थायी रूप से काले रहते है, इसी प्रकार यह जल भौहों पर या दाढ़ी पर लगाने से वहां के बाल भी काले हो जाते है।

४– यदि पेट में तकलीफ या आंतों में सूजन हो, अथवा आंतों में किसी प्रकार का जख्म हो तो इस प्रकार बारह घंटे तक इस शंख में रखे हुए जल का एक चम्मच नित्य पान करे तो धीरे-धीरे आंतों का जख्म मिट जाता है और पेट से सम्बन्धित रोग समाप्त हो जाता है।

५– लगभग बारह घण्टे तक रखा हुआ जल दूसरे सामान्य जल में मिलाकर यदि प्रातःकाल आंखों पर वह जल छिड़का जाय तो आंखें निरोग, स्वस्थ और तन्दुरस्त हो जाती है, तथा यदि कुछ समय तक इसका नियमित अभ्यास करें तो आंखों पर लगा हुआ नजर का चस्मा उतर जाता है, और आंखें सामान्य स्वस्थ हो जाती हैं।

धार्मिक :

धार्मिक दृष्टि से भी इस शंख को लक्ष्मी का अत्यन्त प्रिय आभूषण बताया है, और एक प्रकार से लक्ष्मी का ही प्रति रूप माना है, अतः जिसके घर में पूजा स्थान में यह शंख रहता है, उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी वास बना रहता हैं।

१– यदि प्रातःकाल स्नान करते समय इस शंख में थोड़ा सा जल लेकर वह जल बाल्टी में भरे हुए पानी में मिलाकर स्नान करे तो शरीर पुण्यवान एवं कांति-मय होता हैं।

२– यदि इस प्रकार शंख को कारखाने में या फैक्ट्री में स्थापित किया जाय तो स्वतः ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है, और आर्थिक उन्नति होने लगती है, इस शंख को विशेष रूप से दारिद्रय निवारक कहा जाता है, और इसके रहने से उसके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

दैहिक :

१– मेरा ऐसा अनुभव है, कि यदि प्रातःकाल स्नान कर शरीर को पोंछ कर इस शंख को अपने चेहरे पर हलके हलके रगडे तो धीरे-धीरे चेहरे की झुरिया मिट जाती है और चेहरा कांतिमय बन जाता है।

२– जिनको अपने चेहरे की सुन्दरता को यथावत बनाये रखने की इच्छा हो या जो अपने चेहरे को कांति-युक्त बनाए रखना चाहता हो, उसे इस प्रकार का प्रयोग अवश्य ही करते रहना चाहिए।

३– यदि इस शंख को पूरे शरीर पर हल्के-हल्के फेरा जाय और कुछ दिनों तक ऐसा किया जाय तो अवश्य ही पूरा शरीर मोती की तरह स्वस्थ, सुन्दर एवं लावण्यमय बन जाता है।

४– कभी-कभी आंखों के नीचे काले काले से दाग बन जाते है, जिससे चेहरे की सुन्दरता समाप्त हो जाती है, यदि इस शंख को नित्य प्रातःकाल उठकर आंखों के नीचे धीरे-धीरे फेरा जाय और इस प्रकार कुछ दिनों तक करे तो अवश्य ही ये दाग समाप्त हो जाते है, ऐसा मेरा अनुभव है।

अनुष्ठान :

इस शंख पर कई प्रकार के अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं, पर मेरा मूलतः अनुभव है, कि लक्ष्मी प्राप्ति से सम्बन्धित तथा वशीकरण से सम्बन्धित अनुष्ठान इस पर पूर्ण सफल और प्रभावकारी होते है, मैं अपने दो अनुभूत प्रयोग नीचे स्पष्ट कर रहा हूं—

१- वशीकरण प्रयोग

यदि घर में कलह हो या पति पत्नी में मतभेद हो पत्नी चाहती हो कि उसका पति उसके नियंत्रण में रहे या कोई व्यक्ति किसी अन्य को अपने वश में करना चाहता हो या किसी शत्रु को अपने अधीन करना चाहता हो तो ऐसे प्रयोगों में नीचे लिखा प्रयोग उपयोगी हो सकता है।

यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, रविवार के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दे और इस पर कुंकुम आदि लगा दे, इसके बाद एक घृत का दीपक इसके सामने रखकर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की एक माला फेरे। इस प्रकार तीस दिनों तक नित्य नियमपूर्वक करे तो निश्चय ही वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लेता है, इस प्रकार के प्रयोग में नित्य मात्र दस से पन्द्रह मिनट लगते है, और ऐसा प्रयोग करने पर व्यक्ति मनोवांछित सफलता प्राप्त कर लेता है।

मन्त्र

ॐ क्रीं अमुकं मे वशमानाय स्वाहा।

यह मन्त्र अपने आप में विशेष शक्ति समेटे हुए है, इसकी विधि यह है, कि शंख अपने सामने रख दे, और चावल के साबुत दाने अपने सामने किसी पात्र में रख दे, इस बात का ध्यान रखे कि चावल के दाने खण्डित न हो।

इसके बाद उपरोक्त एक मन्त्र पढ़कर एक दाना इस शंख के मुंह में डाल दे, इस प्रकार नित्य १०८ दाने शंख के मुंह में १०८ बार मन्त्र पढ़कर डाल दे।

मन्त्र में जहां 'अमुक' लिखा हुआ है, वहां उस पुरुष या स्त्री का नाम उच्चारण करे, जिसे वश में करना है,

जब माला पूरी हो जाय, तब वह शंख वहां से उठाकर सुरक्षित स्थान पर रख दे, इस बात का ध्यान रखे, कि शंख में डाले हुए चावल के दाने गिरे नहीं।

दूसरे दिन भी इसी प्रकार १०८ बार मन्त्र पढ़कर चावल के दाने इसमें डाले, इस प्रकार जब ३० दिन तक प्रयोग कर ले तो वे चावल के दाने किसी सफेद कपडे में बांध कर अपने सन्दूक में या किसी सुरक्षित स्थान पर रख दे. ऐसा करने पर वह पुरुष या स्त्री प्रयोग करने वाले के वश में रहेगी और वह जैसा चाहता है, उसी प्रकार से कार्य सम्पन्न होगा।

जब उसे इस वशीकरण प्रयोग से मुक्ति देनी हो तब उस पोटली में से वे चावल के दाने निकाल कर किसी नदी, तालाब या पवित्र स्थान पर डाल देने से वह उस वशीकरण प्रभाव से मुक्त हो जाता हैं।

यह प्रयोग अद्भुत है, और मैंने इसकी प्रामाणिकता कई बार परखी है।

लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग :

यह शंख लक्ष्मी, प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में भी विशेष रूप से सहायक है, कर्जा उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभाव युक्त हैं।

जो व्यक्ति इस प्रकार का प्रयोग चाहता है, या अपने जीवन में पूर्ण आर्थिक उन्नति एवं व्यापार वृद्धि चाहता है, उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

प्रयोग :

किसी बुधवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दे, और उस पर केसर से स्वस्तिक चिन्ह बना दे. इसके बाद निम्न मन्त्र जाप करे, मन्त्र जाप में स्फटिक माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिये।

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं दारिद्रय विनाशिन्ये धनधान्य समृद्धि देहि देहि नमः।

यह मन्त्र पढने के साथ साथ साधक इसके मुंह में चावल का एक दाना डालता रहे, इस बात का ध्यान रखे कि चावल टूटा हुआ न हो, इस प्रकार नित्य एक माला फेरे, यह प्रयोग भी ३० दिन का है, जो अपने आप में अचूक और प्रभाव युक्त है।

पहले दिन की माला समाप्त होने के बाद उसमें चावल पडे रहने दे, और दूसरे दिन भी उसी प्रकार मन्त्र जप करता हुआ उसमें एक एक मन्त्र के साथ एक एक चावल का दाना डालता रहे।

तीस दिन की माला समाप्त होने के बाद चावल के दाने के सहित इस शंख को सफेद कपडे में बांध कर अपने घर में पूजा स्थान में रख दे, या कारखाने फैक्ट्री या व्यापारिक स्थल पर स्थापित कर दे, यह जब तक रहेगा, तब तक उसके जीवन में आर्थिक अभाव नहीं होगा, तथा निरन्तर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी, यह भी स्पष्ट है, कि ऐसा प्रयोग करने पर शीघ्र ही व्यक्ति कर्जे से मुक्ति पा लेता है, और सभी दृष्टियों से उन्नति करता रहता है।

दीपावली के दिन भी इस शंख का पूजन किया जा सकता है, और जिस प्रकार लक्ष्मी की पूजा होती है, उसी प्रकार इसका पूजन किया जाना चाहिए।

वस्तुतः यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त है, तथा ऐसे बिरले ही सौभाग्यशाली, होंगे जिनके घर में इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता होगा, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार का शंख तभी सफलता देने वाला हो सकता है, जब वह प्राण संजीवनी क्रिया से सिक्त मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हो।

वस्तुतः यह शंख प्रत्येक साधु सन्यासी और गृहस्थ के लिए उपयोगी है, और मैंने इस पर कई प्रयोग सम्पन्न किये हैं, आगे फिर कभी इस शंख पर और भी मैंने प्रयोग किये है, और सफलता मिली है, उनका विवरण देने का प्रयत्न करूंगा।

साबर मन्त्र और लक्ष्मी प्रयोग

साबर मन्त्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अचूक प्रभाव युक्त हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में अपने विचार प्रगट करते हुए बताया है कि श्री उमा महेश्वर ने कलियुग के प्राणियों पर दया करने के लिये साबर मन्त्रों की रचना की है जिससे कि वे अपने जीवन के कष्टों और अभावों को दूर कर सके।

कवि विलोक जगहित हरगिरिजा।
साबर मन्त्रजाल जिन्ह सिरिजा॥
अनमिल आखर अरथ न जापू।
प्रगट प्रभाव महेसू प्रतापू॥

यद्यपि इन मन्त्रों में वर्णित अक्षरों का या शब्दों का परस्पर कोई विशेष सम्बन्ध दिखाई नहीं देता परन्तु इनका लक्ष्य अचूक होता है इसका कारण यह है कि अन्य मन्त्र जहां कीलित किये हुए है और उत्कीलन से ही अपना प्रभाव दिखाते हैं वहीं साबर मन्त्रों को कीलित नहीं किया गया है इसलिए अन्य मन्त्रों की अपेक्षा कम समय में साधना करने पर ये मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं।

स्वामी गिरिदेव महाराज ने कृपा कर पत्रिका-कार्यालय में इस सम्बन्ध में जिस प्रकार से साबर मन्त्रों पर अपने विचार प्रगट किये हैं वे पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है :

वैदिक अथवा तांत्रोक्त ऐसे मन्त्र है, जिनकी साधना करने के लिए अत्यन्त सावधानी की जरूरत होती है, असावधानी से कार्य करने पर प्रभाव प्राप्त ही नहीं होता, अथवा सारा श्रम व्यर्थ चला जाता है, परन्तु साबर मन्त्रों की साधना या सिद्धि में ऐसी कोई आशंका नहीं होती, यह सही है कि इनकी भाषा सरल और सामान्य होती है, मन्त्रों को पढ़ने पर ऐसा कुछ भी अनुभव नहीं होता कि इनमें कुछ विशेष प्रभाव है, परन्तु जब उन मन्त्रों का जप किया जाता है, तो असाधारण सफलता दृष्टिगोचर होती है, कुछ मन्त्र तो ऐसे है कि जिनको सिद्ध

करने की जरूरत ही नहीं है केवल कुछ समय तक उच्चारण करने से ही उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लग जाता हैं।

एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि साबर मन्त्र को सिद्ध करने से पूर्व अपने सिद्ध गुरू से इनकी दीक्षा विधिवत रूप से ले लेनी चाहिए, ग्रहण, होली या दीपावली के विशेष अवसर पर इन मन्त्रों को सिद्ध किया जाय या इनका जप किया जाय तो विशेष रूप से अनुकूलता प्राप्त होना आवश्यक है, जिससे कि उसका प्रभाव निरन्तर बना रह सके।

यदि किसी मन्त्र की जप संख्या निर्धारित नहीं है तो मात्र १००८ मंत्र जप करने पर उस मंत्र को सिद्ध समझना चाहिये, फिर भी इस बात का हमेशा ध्यान रखे कि साबर मन्त्र की साधना या सिद्धि से पूर्व किसी साबर मन्त्र विशेषज्ञ या अपने योग्य गुरु से इसका ज्ञान प्राप्त करके उसके अनुसार ही कार्य करे।

गुरू और शिष्य का एक मधुर और पवित्र सम्बन्ध होता है, गुरु के प्रति साधक की जैसी भावना होती है, उसको वैसा ही फल प्राप्त होता है।

मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे देवज्ञे भैषजे गुरो।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।

अर्थात् मंत्र, तीर्थ ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, दवा तथा गुरू में जिस प्रकार की भावना होती है, उसके अनुसार ही उसे सिद्धि प्राप्त होती है।

दूसरी बात साबर मन्त्रों की सिद्धि के लिए मन में दृढ संकल्प और इच्का-शक्ति का होना आवश्यक है, जिस प्रकार की इच्छा शक्ति साधक के मन में होती है, उसी प्रकार का लाभ उसको मिल पाता है, यदि मन में दृढ़ इच्छा शक्ति है तो अन्य किसी भी बाह्य परिस्थितयों एवं कुविचारों का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता, जो मन में धारणा बना लेता है, उस पर दृढ़ रहता हैं, वह शिष्य सदैव प्रसन्न और शांत रहता है, ससार में जितने भी उच्चकोटि के योगी और साधक हुए है, उनके मूल में दृढ़ इच्छा शक्ति ही रही है, क्योंकि दृढ़ इच्छा शक्ति के माध्यम से ही व्यक्ति अपने महान कार्यों का संचालन करता है, और उसी के द्वारा वह सफलता प्राप्त करता है।

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि साबर मन्त्र में जो अक्षर प्रयुक्त होते है, वे मात्र अक्षर नहीं है, अपितु उनमें एक विशेष भावना और प्रभाव है–

गुरो मनुष्यबुद्धिं च मन्त्र चाक्षरवाचिताम्।
प्रतिमासु शिलाबुद्धिं कुर्वाणो नरकं ब्रजेत॥

अर्थात् जो गुरु में मनुष्य की भावना करता है या जो मंत्र में मात्र अक्षर या देव प्रतिमा में मात्र पत्थर की भावना रखता है, वह निश्चय ही नरक प्राप्त होता है।

साबर मन्त्रों की साधना किसी भी दिन से प्रारम्भ की जा सकती हैं, दीपावली के अवसर पर इसका विशेष महत्व है, अतः लक्ष्मी एवं सम्बन्धित कुछ प्रामाणिक साबर मन्त्रों का विवेचन स्पष्ट किया जा रहा है–

१- सर्व कार्य सिद्धि मन्त्र

आर्थिक, व्यावसायिक या व्यापारिक दृष्टि से किसी भी प्रकार की सफलता एवं उन्नति के लिए इस मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है, २१ माला मंत्र जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, दीपावली की रात्रि को इस मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है, सर्व कार्य सिद्धि माला का प्रयोग साधक कर सकता है, आसन किसी भी प्रकार का हो सकता है, यदि रात्रि में इस मंत्र को सिद्ध किया जाय तो विशेष सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ नमो महादेवी सर्वकार्य सिद्धकरणी जो पाती पूरे ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवतन मेरी भक्ति

गुरु की शक्ति श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह मन्त्र महत्वपूर्ण है और दीपावली की रात्रि को श्री महालक्ष्मी पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है, इसकी नित्य एक माला जप करके अपने व्यापार की उन्नति या कार्य की सिद्धि के लिए कहा जाय तो शीघ्र ही उसका कार्य सिद्ध हो जाता है।

२- अद्भुत कार्य सिद्धि मन्त्र

यह मन्त्र भी कार्य सिद्धि मन्त्र कहा जाता है और विशेष रूप से प्रभावयुक्त है। यह भैरव मन्त्र है, अतः साहसी और निडर व्यक्ति को ही इस प्रकार का मन्त्र जप करना चाहिए। दीपावली की रात्रि या ग्रहण की रात्रि में इस मन्त्र को सिद्ध किया जा सकता है। साधना के लिए एक त्रिकोण बनाना चाहिए और उसके सामने चौमुखा दीपक लगाना चाहिए, साधक को शुद्ध वस्त्र पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए एक हजार मंत्र जपने पर यह सिद्ध हो जाता है, यदि साधना काल में भैरव का भयंकर रूप दिखाई दे तो घबराये नहीं अपितु उसके सम्मान में धूप-दीप नैवेद्य प्रस्तुत कर पूजा करे और यदि वह साक्षात् उपस्थित हो तो उसके गले में फूलों की माला पहना दें।

इसके बाद साधक कभी भी इस मन्त्र की एक माला फेरकर अपना जो भी कार्य भैरव को कहेगा वह कार्य अवश्य ही सिद्ध होगा।

मन्त्र

ॐ नमो काली कंकाली महाकाली के पूत कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहे मेरा भेजा तुरन्त करे रक्षा करे आन बांधू बान बांधू चलते फिरते को औसान बांधू दशा मुखा बांधू नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बांधू फूल में भेजूं फूल में जाय काठे जी पड़े थर थर कांपे : हल हल हले गिर गिर गिर पड़े उठ उठ भगे बक बक बके मेरा भेजा सवा घड़ी पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस का बावला न करे तो काली माता की सैया पर पांव धरे। वचन जो चूके समुद्र सूखे। वाचा छोड़ कुवाचा करे तो धोबी की नांद चमार के कुण्डे में पड़े। मेरा भेजा बावला न करे तो रुद्र के नेत्र से अग्नि ज्वाला कढ़े। सिर की जटा टूटी भूमि पर गिरे। माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े। बिना हुक्म नहीं मरना हो। काली कंकाल भैरव फुरा मन्त्र ईश्वरी वाचा।

वस्तुतः यह मन्त्र महत्वपूर्ण है, अतः साधक को सावधानी के साथ इस मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए फिर भी यह देखा गया है कि इस मन्त्र से व्यक्ति आर्थिक उन्नति, व्यापारिक सफलता, शत्रु नाश तथा प्रत्येक कार्य की सिद्धि एवं सफलता प्राप्त कर सकता है, इसका जप भैरव माला से सम्पन्न करें।

३- धन प्राप्ति मन्त्र

यह मंत्र महत्वपूर्ण है, इस मंत्र का जप अर्द्ध-रात्रि के समय किया जाता है, यह साधना २१ दिन की है, और नित्य एक माला मंत्र जप होना चाहिए, यदि शनिवार या रविवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है, इसमें व्यक्ति को लाल वस्त्र पहिनने चाहिए, और पूजा में प्रयुक्त सभी सामान को रंग लेना चाहिए।

दीपावली के दिन भी इस मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है, और कहते है कि यदि दीपावली की रात्रि को इस मन्त्र की २१ माला फेरे तो उसके व्यापार में उन्नति एवं आर्थिक सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ नमो पद्मावती पद्मतनये लक्ष्मीदायिनी वांछा भूत प्रेत विन्ध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी

दुर्जन मोहिनी ऋद्धि सिद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा। ॐ क्लीं श्रीं पद्मावत्यै नमः ।

जब अनुष्ठान पूरा हो जाय तो साधक को चाहिए, कि वह नित्य इसकी एक माला फेरे, ऐसा करने पर उसको आगे के जीवन में निरन्तर उन्नति होती रहती है ।

४- अन्नपूर्णा मन्त्र

इसकी साधना किसी भी दिन की जा सकती है, साधना से पूर्व साधक को अपने घर में छः लड्डू निकाल-कर अलग रख लेने चाहिए तथा उन लड्डुओं पर सिन्दूर लगाकर सामने रख देना चाहिए ।

इसके बाद उन लड्डुओं के सामने अन्नपूर्णा मन्त्र का एक हजार जप करे । जप के बाद एक लड्डू कलश में रखकर कुए से पानी भर ले तथा शेष चार लड्डू कुए में वरुण देवता को समर्पित कर दे । कलश में जो लड्डू एवं जल हो उसको पूरे घर में छिड़क दे । तथा जो छठा लड्डू अलग पड़ा था उसको दक्षिण दिशा की तरफ फेंक दे ।

ऐसा करने पर व्यक्ति अन्नपूर्णा सिद्ध कर लेता है और उसके घर में धन धान्य की कभी भी कमी नहीं आती ।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को गजानन वीर बसे मसान अब दो ऋद्धि का वरदान जो जो मांगु सो सो आन पांच लड्डू सिर सिन्दूर हाट बाट का, माटी मसान को, सब ऋद्धि सिद्धि हमारे पास पठेव शब्द सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

मन्त्र सिद्ध करने के बाद सप्ताह में एक दिन अन्न-पूर्णा मन्त्र की एक माला अवश्य फेर लेनी चाहिए ।

यह मन्त्र परीक्षित है और सिद्ध होने के बाद उसके घर में चाहे कितने ही लोग भोजन करे, भोजन में कमी या न्यूनता नहीं आती ।

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि को ही सिद्ध किया जा सकता है ।

बिक्री बढ़ाने का मन्त्र

व्यापार में बिक्री बढ़ाने का यह अद्भुत एवं अनुभूत मन्त्र है, इसका प्रयोग केवल मात्र तीन **रविवार के दिन** ही किया जाता है, किसी भी रविवार को प्रातः उठकर अपने हाथ में काले उड़द लेकर इस मन्त्र का २१ बार जप करके उन उड़दों को व्यापार-स्थल पर डाल दे । इस प्रकार केवल तीन रविवार करे, अर्थात् यह प्रयोग केवल रविवार के दिन ही किया जाता है ।

ऐसा करने पर उसके व्यापार में उन्नति होती है और आश्चर्यजनक रूप से बिक्री बढ़ती है ।

मन्त्र

भंवर वीर तूं चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा। उठै जो डंडी बिकै जो माल भंवर वीर खाली नहीं जाय

यदि दीपावली की रात्रि को दुकान पर बैठकर इस मन्त्र की २१ मालाएं फेरे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और तब उड़दों को दुकान के बाहर दुकान के सामने डाल दे, ऐसा करने पर बिक्री बढ़ जाती है और व्यापार में उन्नति होने लगती है ।

६- व्यापार वृद्धि मंत्र

व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यदि इस मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करके दुकान खोले और व्यापार का दैनिक प्रारम्भ करे तो उस दिन बिक्री बढ़ती है और किसी प्रकार कोई उपद्रव या परेशानी नहीं आती । इस मन्त्र को सिद्ध करने की जरूरत नहीं है, नित्य दुकान खोलने से पूर्व एक माला फेरनी पर्याप्त है ।

मन्त्र

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे महालक्ष्म्यै नमो नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना करो तो सात समुद्र की दुहाई ऋद्धि सिद्धि खावोगी नौ नाथ चौरासी की दुहाई ।

बालक बालिकाओं की श्रेष्ठ शिक्षा के लिए

एक दिवसीय

सरस्वती साधना सिद्ध करें

सिद्धाश्रम पंचांग और शास्त्रीय प्रमाणों के अनुसार इस वर्ष ७-१०-८९ तदनुसार आश्विन शुक्ल ७, शनिवार को "**सरस्वती साधना दिवस**" है और भारतवर्ष के साधक पिछले कई हजार वर्षों से इस दिवस का उपयोग अपनी शिक्षा के लिए और बालक बालिकाओं की पूर्ण शिक्षा तथा सफलता के लिए सम्पन्न करते आ रहे है। इसीलिए भावी पीढ़ी की दृष्टि से यह दिवस प्रत्येक साधक के लिए महत्वपूर्ण है।

हम सब चाहते है, कि भौतिक दृष्टि से हमने भले ही उन्नति की हो या न की हो, कई परिस्थितयों की वजह से हमने शिक्षा में सफलता पाई हो न पाई हो, परन्तु अब, जब कि हम जागरूक है, सावधान है, और साधना के क्षेत्र में अग्रगण्य है तो हम क्यों न उन साधनाओं को सिद्ध कर दे, जिसकी वजह से हम अपने बालकों को श्रेष्ठ शिक्षा दे सके।

हमने अनुभव किया है, कि कई बार अच्छी व्यवस्था अच्छा स्कूल और अच्छी शिक्षा देने के बावजूद भी हमारे बालक उस प्रकार के अंक परीक्षा में प्राप्त नहीं कर पाते, जिसकी हमें उम्मीद होती है। हमारी इच्छा और आकांक्षा होती है, कि हमारे बालक आई० ए० एस० या उच्चपदस्थ अधिकारी बने अथवा वे जो शिक्षा प्राप्त कर रहे है उसमें बुद्धि का विकास हो, और साधना में सफलता प्राप्त करे, यह तभी संभव हो सकता है जब हम उनको साधनात्मक बल भी साथ ही साथ प्रदान करें।

और यही समय इस दृष्टि से उनके लिए सर्वाधिक उपयुक्त है, क्योंकि अब उनकी पढ़ाई प्रारम्भ हुई है और यदि हम अभी से कोई ऐसा प्रयोग उनके लिए कर दे तो वे निश्चय ही अभी से शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति कर सकेंगे अच्छे अंक प्राप्त कर सकेंगे और साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसीलिए इस सरस्वती दिवस की हमें आवश्यकता है, हम इस दिवस को स्वयं साधना करे, और यह साधना अपने बालकों के लिए सम्पन्न करे, जिससे कि उनको साधनात्मक बल प्राप्त हो सके। सरस्वती दिवस वास्तव में ही पूरे वर्ष का श्रेष्ठतम दिवस होता हैं, जब विद्यार्थी स्वयं अपने लिए इस दिवस का उपयोग करे, या माता पिता अपने बालक बालिका के लिए इस दिवस का उपयोग कर उन्हें पूर्ण सफलता देने में सहयोगी बने।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि सुबह यथासंभव जल्दी उठ जाय और स्नान कर अपने बालक बालिकाओं को भी उठा दें, तथा उन्हे भी सुन्दर, सुसज्जित वस्त्र पहिना कर

पूजा स्थान में या कमरे में किसी स्थान पर बिठा दें।

इसके बाद सामने सरस्वती का चित्र स्थापित करें. यह चित्र पहले से ही बाजार से खरीद कर प्राप्त करलें, या पत्रिका कार्यालय को लिखने पर साधना सामग्री के साथ निशुल्क भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

तत्पश्चात् सामने थाली में कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनावे या अक्षर अंकित करे, तथा इस पर महा सरस्वती यंत्र स्थापित कर दे।

महा सरस्वती यंत्र अपने आप में अत्यन्त सिद्ध महत्वपूर्ण और प्रभावकारी यंत्र होते हैं, जो कि बालक के नाम से ही मंत्र सिद्ध किये जाते हैं। अतः जो साधक अपने बालक बालिका को यह यंत्र पहिनाना चाहे उसे चाहिए की वह पत्रिका मिलते ही हमें पूर्ण विवरण के साथ लिख भेजें। जिससे कि उनके लिये यह महा सरस्वती यंत्र सिद्ध करके भेजा जा सके।

इसके लिए बालक बालिका का नाम (२) उसके पिता का नाम (३) इसकी उम्र या जन्म तारीख (४) वर्तमान में वह कौन सी कक्षा में पढ़ रहा है, या कौन सी परीक्षा देने जा रहा है आदि विवरण पूर्ण रूप से लिख भेजे जिससे कि प्रत्येक बालक के लिए उसके नाम से यह महा सरस्वती सिद्ध कर भेज सके।

इस प्रकार के धारण करने योग्य प्रत्येक "महा सरस्वती यंत्र" पर व्यय मात्र ६०) रू. आता है जो कि अग्रिम आवश्यक है।

यदि आप इस तारीख को अपने घर पर न हो तो आपकी पत्नी ऐसा प्रयोग करे बालक के गले में यंत्र पहिना सकती है।

साधना विधि मे जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि स्वस्तिक का चिन्ह थाली मे बना कर उस पर वे सभी यंत्र रख दे जो अपने पुत्र पुत्रियों को पहिनाने हैं, और फिर उस पर कुंकुम का तिलक करे तथा संभव हो तो पुष्प समर्पित करे।

इसके बाद बालक सामने रखे हुए महा सरस्वती चित्र की पूजा करे, उस पर केसर या कुंकुम लगावे तथा नैवेद्य चढ़ावे, और फिर सामने दीपक लगा कर बालक हाथ जोड़ कर सरस्वती को प्रणाम करता हुआ निवेदन करे, कि मैं आपके इस दुर्लभ यंत्र को धारण कर रहा हूँ मुझे परीक्षा में सफलता प्राप्त हो, मेरी बुद्धि का विकास हो, तथा मैं निरन्तर अच्छे अंक प्राप्त करता हुआ, उन्नति की ओर अग्रसर होऊं।

ऐसा कहने के बाद अपने से संबंधित यंत्र में किसी प्रकार का कोई धागा या चैन पिरो कर उस यंत्र को गले में धारण कर ले, और फिर उठ कर अपने से जो बड़े भाई या माता पिता है, उन्हें प्रणाम करे।

फिर संभव हो तो पुनः आसन पर बैठ कर अपने घर में रखी हुई किसी प्रकार की माला से सरस्वती मंत्र की एक माला मंत्र जप करे।

सरस्वती मंत्र

॥ ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः ॥

ऐसा करने पर उस दिन की साधना सम्पन्न हो जाती है, यदि बालक में श्रद्धा हो और साधना के प्रति रुचि हो तो वह इस मंत्र की एक माला नित्य मंत्र जाप कर सकता है।

इस यंत्र को पूरे वर्ष भर अपने गले में पहिने रहे। ऐसा करने पर उसकी बुद्धि का विकास निरन्तर होता रहता है, तथा वह शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण उन्नति करता हुआ कक्षा में श्रेष्ठ अंक प्राप्त कर अपने माता पिता का नाम रोशन करने में समर्थ सफल हो पाता है।

वस्तुतः यह प्रयोग स्वयं बालक को करना चाहिए, पर यदि बालक छोटा हो तो उसकी मां या उसके पिता यह प्रयोग सम्पन्न कर बालक का भविष्य संवार सकते हैं।

●●

गुरु सिद्धि दिवस - १३-१०-८६

समस्त प्रकार के विघ्न त्रुटियों तथा दोषों को समाप्त करने वाले तथा कुण्डलिनी चैतन्य की अनुभूति प्रदान करने वाला

श्री गुरु साधना तत्व

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार १३-१०-८९ तदनुसार आश्विन त्रयोदशी को गुरु सिद्धि दिवस है। यह अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण दिवस हैं, क्योंकि पूरे वर्ष में यही एक ऐसा दिन है, जब गुरु तत्व की प्राप्ति हो सकती है, यही एक ऐसा दिवस है, जब सारे शरीर में चैतन्यता प्राप्त हो सकती है और कुण्डलिनी जागरण की उर्द्ध-गामी प्रक्रिया का प्रारम्भ होता हैं। इस दिन प्रत्येक साधक के लिए साधना करना अनिवार्य बताया है क्योंकि सिद्धाश्रम के योगियों के अनुसार इस दिन स्वगुरु, आत्म-गुरु परमगुरु और पारमेष्ठी गुरु—अपने सूक्ष्म शरीर से सर्वत्र विचरण करते रहते है और जो भी साधक इस दिन गुरु तत्व साधना सम्पन्न करता है, उसे पूर्ण चैतन्यता प्रदान करते है।

चैतन्य सिद्धि

तापनीयोपनिषद में बताया गया है, कि जब तक साधक को चैतन्य सिद्धि नहीं हो जाती, तब तक उसे सफलता प्राप्त हो ही नहीं सकती। स्वामी विवेकानन्द कई वर्षों से रामकृष्ण परमहंस के सत्संग में रह कर काली साधना सम्पन्न कर रहे थे, पूरी शास्त्रीय विधि से वे साधना कर रहे थे, उन्होंने काली की मूर्ति को प्राप्त किया, पीतल की उस मूर्ति में विधि विधान के साथ पूजन किया, प्राण प्रतिष्ठा की और महाकाल संहिता के अनु-सार उसका पूजन अर्चन चिन्तन, मनन और साधना संपन्न करने लगे।

इस प्रकार पूरे पांच नवरात्र व्यतीत हो गये, पर न

तो काली के दर्शन हुए और न किसी प्रकार की अनुभूति ही हुई। उन्होंने पुनः अपने आपको टटोला कहीं मैं स्वयं तो गलती नहीं कर रहा हूं, उन्होंने रामकृष्ण परमहंस की बताई हुई विधि का पुनः अध्ययन किया, मंत्र को पुनः टटोला और पूरी पूजा अर्चना को ध्यान से अध्ययन किया तो उन्हें कहीं पर भी कोई त्रुटी दिखाई नहीं दी।

वे अत्यन्त क्षुब्ध हो उठे, मन ही मन सोचा कि गुरू रामकृष्ण परमहंस तो समर्थ योगी है, अतः उनकी बताई हुई विधि तो मिथ्या नहीं हो सकती, महाकाल संहिता अपने आपमें प्रामाणिक ग्रन्थ है और महाकाली से संबंधित जो अर्चन पूजन इस ग्रन्थ में दिया है, उस पर शंका करना ही व्यर्थ है, फिर क्या कारण हैं, कि जीवन के पांच वर्ष व्यतीत हो गये, फिर भी न तो महाकाली के साक्षात् दर्शन हो सके, और न इस संबंध में किसी प्रकार की अनुभूति ही हुई।

वे उठ कर रामकृष्ण परम हंस के पास चले आये, उनके चेहरे पर अविश्वास दुःख और क्षुब्धता के चिन्ह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहे थे, रामकृष्ण एक ही क्षण में ताड़ गये, बोले क्या बात है आज तू इतना परेशान क्यों है ?

विवेकानन्द ने उत्तर दिया कि मेरे जीवन के पूरे पांच वर्ष व्यतीत हो गये और मैंने आपकी बताई हुई विधि से और शास्त्रीय मर्यादा के अनुसार महाकाली का पूजन, अर्चन, मनन और मंत्र जाप किया हैं, परन्तु इतना होने पर भी आज तक मुझे पूर्ण रूप से महाकाली के प्रत्यक्ष दर्शन न हो सके।

रामकृष्ण परमहंस ने कहा तुझे हो ही नहीं सकते, क्यों कि उस मूर्ति में तो तूने प्राण प्रतिष्ठा कर दी परंतु तेरा शरीर तो अभी तक पूरा जड़ ही बना हुआ है, उसमें किसी प्रकार की चैतन्यता नहीं है, और एक जड़ को एक निष्प्राण व्यक्ति को मां के दर्शन हो ही कैसे सकते है ?

विवेकानन्द हतप्रभ रह गये, "बोले क्या अभी तक मैं जड़ ही हूं, मैं तो चलता फिरता उठता बैठता खाता पिता सब कुछ क्रियाएं सम्पन्न करता हूं, फिर मैं जड़ किस प्रकार से हूं ?"

रामकृष्ण ने उत्तर दिया, खाना पीना या चलना फिरना तो शरीर की गति है। जीव की गति चैतन्यता है, और यह चैतन्यता एक प्रकार की पूर्ण दीक्षा है यह तभी प्राप्त हो सकती हैं, जब तुम स्वयं गुरू से निवेदन करो। गुरू चल कर के इस प्रकार या इसके लिए प्रेरित नहीं करेगा, यह तो तुम्हारी आन्तरिक भावना होनी चाहिए, ऐसी आन्तरिक भावना का उदय होने पर ही तुम अपने शरीर को चैतन्यता प्रदान करने के लिए गुरू से प्रार्थना करो और तभी गुरू तुम्हें तथा तुम्हारे जीवन को चैतन्यता प्रदान करेगे, पर इससे पूर्व गुरू सिद्धि दिवस की प्रतीक्षा करो, उस दिन चैतन्य सिद्धि के लिए जो विधान महाकाल संहिता में है, उसके अनुसार क्रिया सम्पन्न करो, और उसके बाद गुरू के सामने जा कर चैतन्य होने की इच्छा प्रगट करो, ये दोनों ही चरण मिल कर पूर्ण चैतन्यता प्रदान कर सकते है।

विवेकानन्द उस दिन की प्रतीक्षा करते रहे, जिसे सिद्धाश्रम की भाषा में 'गुरू सिद्धि दिवस' कहा गया है। आश्विन शुक्ल १३ को हर वर्ष गुरू सिद्धि दिवस मनाया जाता हैं (जो कि इस वर्ष १३-१०-८९ को सपन्न हो रहा है) इस दिन विवेकानन्द ने महाकाल संहिता में दी हुई विधि के अनुसार चैतन्य सिद्धि साधना सम्पन्न की, और एक सप्ताह बाद ही अपने गुरू रामकृष्ण परमहस के सामने खड़े हो कर निवेदन किया कि मैं आप से अपने जीव की चैतन्य सिद्धि प्राप्त करने का इच्छुक हूं, कृपया मुझे चैतन्य सिद्धि प्रदान करे।

रामकृष्ण परमहंस ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक उसे "चैतन्य सिद्धि दीक्षा" प्रदान की, सामने विवेकानन्द के द्वारा प्राण प्रतिष्ठा की हुई काली की मूर्ति रखी हुई थी, अकस्मात हृदय में प्राणों में और चेतना में एक झन्कार सी उत्पन्न हुई, सारा शरीर आनन्द के प्रवाह में उन्मत्त हो

गया, और देखा कि सामने महकाली साक्षात् रूप में बैठी हुई मन्द मन्द मुस्करा रही हैं। विवेकानन्द ने प्रणिपात से लेट कर मां के चरणों को पकड़ लिया और आनन्दातिरेक से उमड़ते हुए आंसुओं से उसके दोनों चरणों को धो डाला।

जब थोड़े संयत हुए तो विवेकानन्द अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस की तरफ उन्मुख हुए - बोले यह रहस्य आपने पहले क्यों नहीं बताया, मेरे पांच वर्ष व्यतीत हो गये आप पहले भी तो बता सकते थे।

रामकृष्ण परमहंस ने उत्तर दिया, शास्त्रों में इसका निषेध हैं, उसमें कहा गया है कि सामान्य दीक्षा लेने के बाद भी साधक का मन चंचल बना रहता हैं, वह बराबर विश्वास अविश्वास के झूले में झूलता रहता है। गुरू के प्रति श्रद्धा में संदेह-असंदेह की परछाई में डूबता उतरता रहता है, पर यदि वह विविध साधनाएं या किसी एक देवता की साधना सम्पन्न करता रहता है, तो स्वयं ही उसके हृदय में चेतना का भाव उदय होता है, और जब वह अपने गुरू से चैतन्य दीक्षा की कामना करता है, या शास्त्रों के अनुसार जब वह चैतन्य दीक्षा की इच्छा प्रगट करे, तब गुरू आश्विन त्रयोदशी गुरू सिद्धि दिवस के अवसर पर चैतन्य सिद्धि साधना प्रदान करे, और इसके बाद जब वह पुनः गुरू के सामने उपस्थित हो, तब विशेष विधि से "चैतन्य दीक्षा" प्रदान करे !

और ऐसी दीक्षा प्रदान करते ही उसका सारा शरीर जाग्रत और चैतन्य हो उठता है, और उसे इष्ट के साक्षात् दर्शन हो जाते है। उसे साधनाओं में सिद्धि मिलने लग जाती है, और वह सही अर्थो में "सिद्धि पुरूष" बन कर समाज का और देश का कल्याण करने में समर्थ, सफल हो पाता है।

गुरू सिद्धि दिवस

इसीलिए लगभग सभी शास्त्रों में गुरू सिद्धि दिवस का विशेष महत्व है, और प्रत्येक साधक महाकाल संहिता में वर्णित गुरू साधना सिद्धि को सम्पन्न करता है, जिससे उसके प्राण जाग्रत होने लगते है, और इसके बाद वर्ष में कभी भी जब उसे अवसर मिले तो वह सशरीर गुरू के सामने उपस्थित हो कर चैतन्य सिद्धि दीक्षा प्राप्त करने की इच्छा प्रगट करे, और तब गुरु उसे यह दुर्लभ दीक्षा प्रदान करते है।

इस प्रकार की दीक्षा सामूहिक रूप से नहीं दी जा सकती, अपितु प्रत्येक साधक को अलग अलग व्यक्तिगत रूप से ही दीक्षा प्रदान की जा सकती है, चाहे शिष्य कितने ही वर्ष गुरू के साथ रहा हो, या कितना ही गुरु का प्रिय हो, परन्तु उसके अनुरोध पर ही गुरु यह चैतन्य दीक्षा प्रदान करते है।

चैतन्य साधना सिद्धि

इस दिन जिस प्रकार से चैतन्य साधना सिद्धि संपन्न की जाती है, और महा काल संहिता में जिस प्रकार से इस साधना सिद्धि का विवरण वर्णन दिया है, उसे मैं आगामी पृष्ठों में स्पष्ट कर रहा हूँ।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि चैतन्य साधना जीवन की महत्वपूर्ण दिव्य साधना है, इसके लिए गुरू सिद्धि दिवस को साधक सुबह स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाय और सामने एक लकड़ी के बाजोट पर गणपति की स्थापना कर दे, और संक्षिप्त गणपति पूजन करे।

इसके बाद सामने एक दूसरा लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर ताम्र पत्र पर अंकित "गुरू चैतन्य यंत्र" स्थापन करे यह यंत्र महाकाल संहिता के अनुसार तीन प्रकार के गुणों से विभूषित हो।

महाकाल संहिता के अनुसार संसार का सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय "गुरू चैतन्य यंत्र" होता है जो कि ताम्र पत्र पर ही अंकित हो। ताम्र पत्र पर अंकित होने का विधान इसलिए बताया है, कि उसमें प्राण तत्व का आह्वान किया जाता है और जब साधक उस ताम्र पत्र में गुरु प्रगटीकरण की भावना दे, तो उसे स्नान करा सके, पौंछ सके, और अन्य अपनी भावनाएं स्पष्ट कर सके, इस वजह से कागज का यंत्र या भोज पत्र पर अंकित यंत्र उपयोगी नही माना गया है।

फिर यह यंत्र योगिनी तंत्र के अनुसार मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, क्योंकि इसकी प्राण प्रतिष्ठा सर्वथा दूसरे प्रकार से की जाती है, अन्य यन्त्रों की प्राण

प्रतिष्ठा का विधान वैदिक या मांत्रिक है तो इस यंत्र का विधान पूर्णतः योगिनी तंत्र सिद्धान्तों के आधार पर हो।

तीसरा इस तंत्र की विशेषता यह है, कि यह साधक के नाम से अभिषित और सिद्ध हो, जिससे कि उस यंत्र का साधक के प्राणों से सीधा संबंध स्थापित हो सके, इसीलिए इस तंत्र का महात्म्य शास्त्रों में विशेष रूप से बताया गया है और श्रेष्ठ स्तर के साधकों के पूजा स्थान में इस प्रकार के यंत्र को सर्वाधिक प्रमुखता दी जाती है।

जो साधक इस प्रकार का यंत्र अपने घर में स्थापित करना चाहे, उसे चाहिए कि वह निम्न जानकारी देते हुए, यंत्र कार्यालय से प्राप्त करे, साधक अपना नाम, अपने पिता का नाम और अपना गौत्र स्पष्ट रूप से लिखे। यदि गौत्र ज्ञात न हो, तो वशिष्ठ गौत्र का उल्लेख करे।

साधना में इस यंत्र को लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर भव्यता के साथ स्थापित करे, और फिर "ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः" मंत्र का उच्चारण करता हुआ, उस यंत्र को जल से दूध दही घी, शहद शक्कर और पुनः जल से स्नान करा कर पौंछ कर उसी बाजोट पर या लकड़ी के तख्ते पर स्थापित करे, और फिर उपरोक्त मंत्र से ही उस पर केसर का तिलक करे और फिर सामने पुष्प समर्पित करते हुए पुष्पहार पहिनाये तथा शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती प्रज्वलित करे।

तत्पश्चात योगिनी तंत्र में दिये हुए निम्न गुरू महात्म्य का पांच बार पाठ करें।

श्री गुरू महात्म्य

आदि-नाथो महादेवि! महा-कालो हि यः स्मृतः।
गुरूः स एव देवेशि! सर्व मन्त्रो धुना परः॥
शैवे शाक्ते वैष्णवे च, गाणपत्यै तथैन्दवै।
महा-शैवे च सौरे च, स गुरू नात्र सशयः॥
मन्त्र देवता स एव स्याननापरः परमेश्वरि।
मन्त्र प्रदान काले हि, मानुषो नग-नन्दिनि॥
अधिष्ठानं भवेत् तस्य; महा-कालस्य शांकरि।
देवि! ह्यमानुषी चैयं, गुरूता नात्र संशयः॥
मन्त्र दाता शिरः पद्मे; यद् ध्यानं कुरूते गुरूः।
तद् ध्यानं कुरूते देवि! शिष्योपि शीष पंकजे॥
अतएव महेश नि! एक एव गुरूः स्मृतः।
अधिष्ठानं भवेत् तस्यामानुषस्य महेश्वरि।
महात्म्यं कीर्तितं येव सर्व शास्त्रेषु शांकरि॥

इसके बाद साधक गुरू "दिव्य माला" से वहीं बैठे बैठे गुरू चैतन्य साधना मन्त्र जप करें, इस दिन इस मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करने का विधान है, यह मन्त्र अत्यंत गोपनीय और दुर्लभ कहा गया है, अतः साधक को चाहिए कि मत्र में पूर्ण भावना रखते हुए यह मंत्र जप करे और मन्त्र जप करते समय अपनी दृष्टि ताम्र पत्र पर अंकित गुरू चित्र पर ही स्थापित करें।

गोपनीय चैतन्य सिद्धि त्रैलोक्य विजय मन्त्र

ॐ चित्मंगल हन हन, दह दह, पच पच सर्वज्ञा ज्ञापय स्वाहा।

इसका २१ माला मंत्र जप करने के बाद साधक पुनः गुरू मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें और फिर अपने प्राणों में चैतन्यता प्राप्त करने के लिए निम्न मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें।

आं ह्रीं क्रों श्रीं स्वाहा मम गुरू देवतायाः प्राण इह प्राणः, आं ह्रीं क्रों श्रीं स्वाहा मम गुरू देवतायाः जीव इह स्थितः, आं ह्रीं क्रों श्रीं स्वाहा मम गुरू देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि, आं ह्रीं क्रों श्रीं स्वाहा मम गुरू देवतायाः वाड् मनो नयन घ्राण-श्रोत्र त्वक्-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके बाद साधक वह माला अपने गले में धारण कर ले और पूरे विधि विधान के साथ गुरु आरती करे, और उस अद्वितीय चैतन्य यंत्र को पूजा स्थान में ही रहने दे, तथा भविष्य में संभव हो तो नित्य दीपक और अगरबत्ती उसके सामने प्रज्वलित करे।

महाकाल संहिता के अनुसार इसके बाद किसी भी दिन व्यक्तिगत रूप से गुरु के सामने पहुँच कर उनसे प्रार्थना कर व्यक्तिगत रूप से चैतन्य सिद्धि दीक्षा प्राप्त कर ले और ऐसा करते ही, उसका सहस्त्रार जाग्रत होने लगता है और वह अपने इष्ट के और समस्त देवी देवताओं के साक्षात दर्शन करने में समर्थ सफल हो पाता है। 卐

धन त्रयोदशी—२७-१०-८६

तांत्रोक्त

धनेश्वरी आबद्ध सिद्ध साधना

कार्तिक कृष्ण १३ तदनुसार २७–१०–८९ को धन त्रयोदशी है, पूरे भारतवर्ष के लोग धन त्रयोदशी को भगवती लक्ष्मी की पूजा साधना करते है और कुछ विशेष प्रयोग सम्पन्न करते है, जिससे कि अगले पूरे वर्ष तक उसके घर में लक्ष्मी का निवास बना रहे।

इस बार धन त्रयोदशी विशेष योगों से निर्मित है क्योंकि हस्त नक्षत्र पर होने के कारण इसका महत्व और बढ़ गया है तथा इस दिन अमृत सिद्धि योग होने के कारण इसका महत्व और भी बढ़ गया है तथा इस दिन अमृत सिद्धि योग होने के कारण अपने आपमें एक महत्वपूर्ण दिवस हमारे सामने आया है।

नीचे मैं एक अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग दे रहा हूं, यह प्रयोग मुझे अपने पिताजी से प्राप्त हुआ था वे लक्ष्मी से संबंधित साधनाओं में अग्रगण्य थे और उन्होंने अपने गुरू से यह साधना प्राप्त की थी।

मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय हरी शंकर जी गढ़वाल में रहने वाले प्रसिद्ध पंडित थे और कई वर्षों तक वह एक सिद्ध योगी के संपर्क रहे थे। काफी वर्षो तक उनकी सेवा करने के फलस्वरूप उनसे कई विद्याएं मेरे पूज्य पिताजी को प्राप्त हुई थी, यद्यपि हमारा घर और हमारे पूर्वज अत्यन्त साधारण थे, परन्तु इतना होने के बावजूद भी हम करोड़ों में खेले और जीवन की पूर्ण समृद्धता अनुभव की।

यद्यपि मेरे पिताजी ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे परन्तु विविध साधनाओं को सम्पन्न करने से उन्हें कई प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हो गई थी। यह विद्या भी मुझे अपने पिताजी से ही प्राप्त हुई थी। मैंने स्वयं तो यह साधना सम्पन्न की ही है अपने मित्रों को भी सम्पन्न कराई है, और जिन जिन मित्रों ने यह साधना सम्पन्न की है, उन्हें अनायास धन प्राप्त हुआ है।

यही नहीं अपितु इसके फलस्वरूप मुकदमें की परेशानी, विवाह बाधा, मकान की न्यूनता, पारिवारिक झंझट, ग्रह बाधा और आर्थिक अभाव भी दूर हुए है और आज वे सभी समाज में सम्माननीय तथा सम्पन्न है। मैंने यह अनुभव किया है, कि इस साधना को सम्पन्न करने से आर्थिक बाधा तो रहती ही नहीं, और घर की गरीबी पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है। इस साधना को सम्पन्न करने से जीवन में पूर्ण वैभव, धन, सुख, तथा भाग्योदय प्राप्त होने लगता है।

पत्रिका पाठकों के लिए और विशेष कर साधकों के लिए यह गोपनीय साधना मैं आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं, मुझे विश्वास है कि इस साधना को सम्पन्न कर निश्चय ही साधक मेरे कथन से सहमत होंगे।

इस साधना को सम्पन्न कब करे ?

पिताजी के अनुसार यह साधना या अनुष्ठान सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण अथवा धन, त्रयोदशी को सम्पन्न किया जा सकता है। इसके अलावा किसी भी रवि पुष्य योग और दीपावली की रात्रि को भी सम्पन्न किया जा सकता है। यह एक रात्रि की साधना है और इस साधना को संपन्न करने से साधक के सारे मनोरथ पूर्ण होते है।

अनुष्ठान विधि

मेरी राय में यदि धन त्रयोदशी की रात्रि को यह साधना सम्पन्न करे, तो ज्यादा उचित रहता है, सबसे पहले साधक पूजा स्थान में पीला आसन बिछा कर पूर्व या उत्तर दिशा की और मुंह कर के बैठ जाय और और साधना सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर ले।

साधना सामग्री में १) जल पात्र, २) गंगाजल या कुए का जल, ३) दूध ४) घी ५) शहद, ६) चीनी, ७) पंचामृत (दूध, घी शहद दही शक्कर) ८) कुंकुम या केसर ९) चावल, १०) पुष्प तथा पुष्प माला ११) नैवेद्य १२) धूप या अगरबत्ती १३) दीपक, १४) नारियल १५) फल तथा १६) दक्षिणा।

साधक को यह पूजन सामग्री पूजा स्थान में रखने के साथ साथ "अष्ट गन्ध" को भी तैयार करके रख देना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार निम्न आठ वस्तुओं को पीस कर पानी में घोल कर स्याही बना ले जिसे "अष्ट गन्ध" कहा जाता है, इस बारे में पत्रिका में पहले भी बताया जा चुका है। अष्ट गन्ध में निम्न आठ वस्तुएं होती है- १) चन्दन, २) अगर, ३) केसर, ४) कुंकुम, ५) रोचन, ६) शिला रस, ७) जटामासी, ८) कपूर - इन आंठों वस्तुओं को बराबर मात्रा लेकर पीस कर पाउडर बना कर पानी में घोल कर स्याही बना कर साधना में प्रयुक्त की जा सकती है। यदि साधक इस प्रकार की व्यवस्था न कर सके तो पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर अष्ट गन्ध प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अलावा साधक को चाहिए, कि जिस दिन यह साधना सम्पन्न करे, उस दिन वह सात्विक जीवन व्यतीत करे, ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करे, दिन में एक बार भोजन करे तथा भूमि शयन करे। इसके अलावा इस बात का ध्यान रखे कि यह प्रयोग या अनुष्ठान किसी को बतावे नहीं तथा गोपनीय रखे।

प्रयोग विधि

उपरोक्त सारी सामग्री तैयार करने के बाद साधक सफेद कागज लेकर चार इन्च लम्बा तथा चार इन्च चौड़ा कागज का टुकड़ा बनावे, इस प्रमाण के ४१ कागज के टुकडे तैयार करके रख दे और फिर साधक स्नान कर पीली धोती पहिन कर रात्रि को आठ बजे के बाद कभी भी आसन पर बैठ जाय और सामने एक उत्तम भगवती लक्ष्मी का चित्र यदि घर में हो तो स्थापित कर दे, यदि न हो तो बाजार से दो चार

दिन पहले ही लक्ष्मी का चित्र प्राप्त कर उसे मढ़वा कर पूजा स्थान में रख दें। साधक के घर में मृग छाला हो तो आसन के ऊपर बिछा दें और मृग छाला न हो तो ऊनी आसन अथवा आसन के ऊपर कम्बल बिछा कर बैठ सकता है।

फिर साधक अपने सामने लकड़ी का एक बाजोट रखें और उस पर पीला कपड़ा बिछा दें। इसके ऊपर एक थाली रखें जो कि चांदी की या पीतल की हो सकती है। लोहे अथवा स्टील की नहीं होनी चाहिए। फिर इस थाली के मध्य में निम्न 'धनेश्वरी यंत्र' का अंकन अष्ट गन्ध से चांदी की शलाका के द्वारा करे। चांदी की शलाका साधक पहले से ही तैयार कर के रख दे या किसी सुनार से चांदी का पतला सा तार तैयार कर अपने पास रख दें, जिसके द्वारा इस यंत्र का अंकन थाली में करें।

धनेश्वरी यंत्र

श्रीं	ऐं		ह्रीं	श्रीं
ऐं	४		१	मः
ह्रीं	६	५	७	न
ध	२		३	यैं
	श्व		ने	

इस यंत्र को भली प्रकार से अंकन करने के बाद इस यंत्र के ऊपर "धनेश्वरी आबद्ध सिद्ध यंत्र" को स्थापित कर दें, यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित महत्वपूर्ण और दुर्लभ होता है, जो कि अपने आपमें ही पूर्ण भाग्योदय-कारक, धनप्रदायक तथा सौभाग्यशाली माना गया है।

शास्त्रों में वर्णित इस प्रकार के यंत्र को आप कहीं से भी प्राप्त करले, अथवा समय रहते, पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करने पर इस प्रकार का दुर्लभ यंत्र प्राप्त किया जा सकता है, यह यंत्र धनेश्वरी साधना से सिद्ध और लक्ष्मी आबद्ध मंत्र से आपूरित होता है, जिसकी वजह से यह साधना पूर्ण सम्पन्न होती है, और आने वाली पीढ़ियों के लिए यह यंत्र सौभाग्यशाली बना रहता है।

इसके बाद एक अलग पात्र में इस "धनेश्वरी आबद्ध सिद्ध यंत्र" को रख कर जल से स्नान करावे और फिर पंचामृत से स्नान करा कर पुनः उसी थाली में स्थापित कर दे, जिस थाली में अष्ट गन्ध से धनेश्वरी यंत्र अंकन किया था।

इसके बाद इस ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र को पुष्प समर्पित करे, पुष्प माला पहिनाएं सामने धूप दीप लगावे, नारियल समर्पित करे, तथा भोग लगावे। इस प्रकार का प्रत्येक कार्य करते समय साधक "ॐ धनेश्वर्यै आगच्छ आगच्छ आबद्ध आबद्ध सिद्धयै नमः" मंत्र का उच्चारण करता रहे, सम्पूर्ण पूजन इसी मंत्र के उच्चारण से किया जाता है।

इसके बाद इस यंत्र को अपने प्राणों से लक्ष्मी के प्राणों से परस्पर जोड़ता हुआ निम्न प्राण प्रतिष्ठा करे। इसमें साधक अपने, बांये हाथ को हृदय पर रखे तथा दाहिने हाथ में पुष्प की पंखुड़ियां और थोड़े से अक्षत ले कर इस ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र पर धीरे धीरे चढ़ाता हुआ, निम्न प्राण प्रतिष्ठा मंत्र को तीन बार उच्चारण करे। इस प्राण प्रतिष्ठा मंत्र में जहां जहां पर "मम" शब्द आया है, वहां वहां साधक अपने नाम का उच्चारण करे।

श्रों श्रां ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सो हं मम प्राणाः इह प्राणाः श्रों श्रां ह्रीं क्रों यं रं लं वं षं स हं हंसः सोहं सर्व इन्द्रियाणि इह मम प्राणाः श्रों श्रा ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं मम वाङ्-मन-चक्षु- श्रोत्र जिहवा घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके बाद साधक के पास कागज के जो ४१ टुकडे रखे हुए है, उसमें से प्रत्येक टुकडे पर चांदी की सलाका से अष्ट गन्ध के द्वारा धनेश्वरी यंत्र का अंकन करे धने-श्वरी यंत्र ऊपर छपा हुआ है। इसके बाद उन ४१ टुकड़ों को एक दूसरे के ऊपर रख कर इन टुकड़ों की पूजा करे, कुंकुम अक्षत, पुष्प समर्पित करे श्रौर फिर तीन बार उपरोक्त विधि से ही प्राण प्रतिष्ठा मंत्र का उच्चारण करे।

इसके बाद साधक निम्न स्तोत्र मंत्र का ४१ बार पाठ करे, पाठ के समय घी का दीपक बराबर लगा रहना चाहिए। जो साधक संस्कृत पढे लिखे नहीं हैं, वे भी धीरे धीरे इस स्तोत्र का उच्चारण कर सकते है। मैंने अनुभव किया है, कि जिस तरीके से भी उच्चारण हो, उच्चारण से श्रौर पूरे ४१ बार पाठ करने से निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती हैं।

पाठ के बाद उन ४१ कागज के टुकड़ों को जिन पर धनेश्वरी यंत्र अंकित है, किसी डिब्बी में बन्द करके रख दें ! तथा ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र को भी अपने पूजा स्थान में बना रहने दें।

पाठ के बाद उस ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र की सात प्रदक्षिणा करे और फिर साधना पूर्ण समझे।

मैंने अनुभव किया है कि इसका लाभ तुरन्त प्रतीत होता हैं, श्रौर कई बार मैंने यह भी अनुभव किया है कि दूसरे दिन से ही साधक को श्रार्थिक व्यापारिक दृष्टि से चमत्कारिक अनुभव होने लगते हैं।

नीचे मैं ऊपर वर्णित स्तोत्र मंत्र को शुद्धता से प्रका-शित कर रहा हूं।

धनेश्वरी श्राबद्ध स्तोत्र

नमस्ते सर्व भूतानां जननीमब्धि-सम्भवाम्।
श्रियमुन्निद्र-पद्माक्षीं विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थितां ॥
पद्मालयां पद्म - करां पद्म-पत्र - निभेक्षणाम्।
वन्दे पदम-मुखीं देवीं पद्म-नाभ-प्रियामहम् ॥
त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोक-पावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती ॥
यज्ञ-विद्या महा विद्या गुह्य-विद्या च शोभने।
श्रात्म-विद्या च देवि ! त्वं विमुक्ति-फल-दायिनी ॥
श्रान्विक्षिकी त्रयी वार्ता दण्ड-नीतिस्त्वमेव च।
सौम्याऽसौम्यैर्जगद्-रूपैस्त्वयैतद् देवि! पूरितम् ॥
का त्वन्या त्वामृते देवि ! सर्व-यज्ञ-मयं वपुः।
श्रध्यास्ते देव-देवस्य योगी-चिन्त्यं गदा-भृतः ॥
त्वया देवि ! परित्यक्तं सकलं भुवन - त्रयम्।
विनष्ट-प्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितम् ॥
दाराः पुत्रास्तथाऽऽगार-सुहृद्धान्य-धनादिकम्।
भवत्येतन्महाभागे! नित्यं त्वद्-वीक्षणान्नृणाम् ॥
शरीरारोग्यमैश्वर्यमरि - पक्ष-क्षयः सुखम्।
देवि! त्वद्-दृष्टि-दृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम् ॥
त्वमम्बा सर्व-भूतानां देव-देवो हरिः पिता।
त्वयैतद् विष्णुना चाम्ब! जगद् व्याप्तं चराचरम् ॥
मा नः कोशं तथा गोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजे सर्वथा पावनि ॥
मा पुत्रान् मा सुहृद्-वर्गान् मा पशून् मा विभूषणं।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षः स्थलाश्रये ॥

तंत्र क्षेत्र में

कमला साधना

एक बार सनत कुमार समस्त लोकों का भ्रमण करते हुए विष्णु लोक में जा पहुँचे, वहां उन्होंने भगवान विष्णु के साथ पलंग पर आसीन वस्त्र एवं आभूषणों से विभूषित महामाया भगवती कमला के दर्शन किये तो भक्ति भाव से गदगद हो कर सनत कुमार उनकी स्तुति करने लगे।

हे, भगवती! तुम लक्ष्मी स्वरूपा हो, तुम्हारी कृपा से मुझको सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो, हे, लक्ष्मी! आप कृपा कर मेरी वाणी और मेरे मन को सही रास्ते पर गतिशील करे, मुझे ओज, तेज बल, बुद्धि क्षमता और वैभव प्राप्त हो। महामाया कमला को पाकर स्वयं आदिदेव भगवान तीनों रूपों में प्रगट हो कर समस्त लोकों का सृजन, पालन, और संहार करते हैं, वही आद्या शक्ति मेरा कल्याण करे। जिनकी कृपा दृष्टि से कमल से उत्पन्न ब्रह्मा तथा अन्य प्रमुख देवता शक्ति प्राप्त करते है, जो वर देने वाली भगवती लक्ष्मी प्रसन्न हो कर सुख प्रदान करती है, उस महामाया पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को मैं प्रणाम करता हूँ, और जो प्राणी सिर झुका कर आपको हृदय से नमन करते है, उनकी कभी भी दुर्गति नहीं होती, ऐसे साधक निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त लोक तक वैभव सम्पन्न हो कर धन, धान्य, सम्मान, प्रसिद्धि कीर्ति और सुख को प्राप्त करते है। मैं आपका क्या वर्णन करूं, आप को हजार-हजार बार नमस्कार है।

वास्तव में ही लक्ष्मी की साधना तंत्र मार्ग से ही संभव है, और यह कमला साधना के द्वारा सहज संभव है। कमला तंत्र में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जीवन में अतुलनीय धन, वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है, कि कमला साधना एक तरफ जहाँ पूर्ण मानसिक शान्ति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव, और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है। तंत्र में इसके द्वादश

नाम स्पष्ट हुए हैं। यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उल्लेख या उच्चारण ही नित्य कर लेता है, तो भी उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है। फिर यदि कोई कमला जयन्ती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है।

कमला के द्वादश नामों में है— १) महालक्ष्मी, २) ऋणमुक्ता, ३) हिरण्मयी, ४) राजतनया ५) दारिद्रय हारिणी, ६) कांचना, ७) जया, ८) राजराजेश्वरी, ९) वरदा १०) कनकवर्णा, ११) पद्मासना, १२) सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चय ही साधक आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है। जो तंत्र के क्षेत्र में थोड़ी बहुत भी रूचि रखते है, वे कमला तंत्र के नाम से परिचित है, और वे यह भी जानते है, कि यह तंत्र कितना अधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। एक प्रकार से देखा जाय तो कमला तंत्र सर्वथा गोपनीय हो रहा है, मगर जो साधक पूर्ण निष्ठा के साथ इस कमला तंत्र को सम्पन्न कर लेता है। उसे जीवन में समस्त सुख, वैभव और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। दरिद्रता तो हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की संभावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ, सही अर्थों में वैभव युक्त बन जाता है।

इस वर्ष ३०-१०-८९ को कमला जयन्ती है, साधक को चाहिए कि वे प्रातः काल उठ कर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाए और फिर साधना प्रारम्भ करे। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जल पात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का प्रसाद, पुष्प, आदि हो। कमला साधना मे अष्ट गन्ध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्ट गन्ध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख दें।

कमला यंत्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार 'कमला यंत्र' ही है। क्योंकि यह पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धिदायक है। कमला तंत्र में यंत्र के बारे मे बताया है, कि वह पूर्ण विधि के साथ षटकोण सहित अष्ट दलों से युक्त महत्वपूर्ण यंत्र हो।

अनुक्तकल्पे यन्त्रन्तु लिखेत्पद्मन्दाष्टकम् ॥
षटकोणकर्णिकन्तत्र वेदद्वारोपशोभितम् ॥

यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ कमला तंत्र में बताया गया है, कि जब तक "तंत्रोद्धार" सम्पन्न यन्त्र न हो तो उसका प्रभाव नहीं होता, तंत्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये है, बताया है, कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

कमला तंत्र के अनुसार १) यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए, २) इसका पूर्ण रूप से मन्त्रोद्धार हो, ३) यह वाग् बीज से सम्पुटित हो, ४) लज्जा बीज के द्वारा इसका अभिषेक हो, ५) श्री बीज के द्वारा यह मंत्र सिद्ध हो, ६) कामबीज के द्वारा यह वशीकरण युक्त हो, ७) पद्मबीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो, ८) जगत बीज के द्वारा यह शीघ्र सिद्धिदायक हो, ९) रूपबीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो, तथा १०) मनु बीज के द्वारा मन पर नियंत्रण प्रदान करने वाला हो, ११) ऐं बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो, तथा १२) रमा बीज के द्वारा यह सिद्धिदायक हो।

तारम्पूर्व्वं लिखित्वा परमलममलं व्वाग्भवम्बीजगन्य।

हृल्लेखाश्री बीजपूर्वं त्वशकरणतमंकामबीजम्प
रस्तात् ।।
ह्रौं पश्चाद्योजनीयं सुयुतमथ जगत्पूर्विकाया
प्रसूत्या ।
न्डेतं रुपन्नमोन्तन्निखिलमनुविदेम्भन्त्रमुक्तं रमायाः ।।

वास्तव में ही कमला यंत्र पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है। इस प्रकार का यंत्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करे। ऐसा यंत्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक रहेगा ही, आने वाली कई कई पीढ़ियों के लिए भी यह यंत्र भाग्योदयकारक बना रहेगा।

इस प्रकार के यंत्र को जल से और फिर दूध, दही, घी, शहद, शक्कर-पंचामृत से स्नान करा कर पुनः शुद्ध जल से धो कर लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर पीला वस्त्र स्थापित कर इस यंत्र को प्रतिस्थापित करना चाहिए। फिर साधक अलग पात्र में गणपति को स्थापन करे, दूसरे लकड़ी के बाजोट पर नवग्रहों को स्थापित करे और फिर एक थाली रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगावे सबसे ऊपर चार बिन्दियां लगा दें, फिर उसके नीचे चार बिन्दियां लगावे, इस प्रकार चार लाइनों मे १६ बिन्दियां स्थापित हो जाती है, तत्पश्चात प्रत्येक बिन्दी पर एक लौंग तथा एक इलायची रख कर फिर इसका अष्ट गन्ध से पूजन करे। और हाथ जोड़ कर ध्यान पढ़े—

उद्यन्मार्तण्ड - कान्ति - विगलित कवरीं कृष्ण
वस्त्रांवृतांगाम्
दण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम।
नाना रत्नैर्विभाता स्मित-मुख-कमलां सेवितां
देव-सर्वे
मीया राज्ञीं नमो भूत् स-रवि-कल-तनुमाश्रये
ईश्वरी त्वाम् ।।

जो साधक संस्कृत पढ़े लिखे नहीं है, उनको चिन्ता नहीं करनी चाहिए और धीरे धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान पढ़ सकते है।

फिर अपने सामने ॐ शंखायै नमः इस मंत्र से शंख स्थापित करे, और पुष्प तथा अक्षत अपने सिर पर चढ़ा ले।

इसके बाद ताम्र पत्र पर अंकित "कमला यंत्र" को जहां सोलह बिन्दियां लगाई हुई है, उसके ऊपर पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करे, और अष्टगन्ध से इस यंत्र पर सोलह बिन्दियां लगा दे। ये सोलह बिन्दियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक मानी जाती है।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मंत्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यंत्र पर पुष्प अक्षत समर्पित करे—

ॐ ऐ ह्रीं श्रीं कान्हेश्वरी सर्व-जन-मनोहारिणीं, सर्व-मुख-स्तम्भिनी, सर्व-स्त्री पुरुषाकर्षिणीं वन्दी-शंखेनात्रोटय त्रोटय सर्व-शत्रूना भंजय-भंजय द्वेषि दलय दलय निर्दलय निर्दलय सर्व-शत्रूणां स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषि उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा। देवि सर्व सिद्धेश्वरि कामिनी-गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममोषकल्पितां पूजां गृहाण मम सपरिवारं रक्ष रक्ष नमः ।।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे उसका पूजन करे, तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे, ऐसा करने के बाद साधक इस यंत्र पर कुंकुम समर्पित करे, पुष्प तथा पुष्प माला पहनाये, अक्षत चढाये, तथा नैवेद्य का भोग लगावे। सामने ताम्बूल, फल, और दक्षिणा समर्पित करे।

तत्पश्चात् साधक को चाहिए कि वह निम्न दुर्लभ स्तोत्र का पांच बार पाठ करे जो कि महत्वपूर्ण है, इसके द्वारा उस यंत्र का साधक के प्राणों से सीधा संबंध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि, तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

इस स्तोत्र का उच्चारण सनत कुमार ने भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए किया था। कमला उपनिषद में भी इस लघु स्तोत्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है—

वाचं में दिशतु श्री देवी मनो में दिशतु वैष्णवी। ओजस्तेजो बल दाक्ष्य बुद्धिर्वैभवमस्तु में। त्वत्प्रसादाद भगवति। प्रज्ञानं मे ध्रुवं भवेत्। शन्नो दिशतु श्री देवी महा-माया वैष्णवी शक्तिराद्या। यामासाद्य स्वय मादि-देवो भगवान् परावरज्ञस्त्रिघा सम्भिन्नो लोकांस्त्रीन् सृजत्यवत्यत्ति च। यद् भू विक्षेप बलमापन्नो हयव्ज-योनिस्तदितरे चामरा मुख्याः सृष्टि चक्र प्रणेतरः सम्बभूवुः। या वै वरदा स्वोपाया सुप्रसन्ना सुखयति सहस्त्र पुरुषान् ये लोकाः सन्तत मानमन्ति शिरसा हृदयेन चतामेकां लोक-पूज्यां न ते दुर्गति यान्ति भूताः॥

वास्तव में ही यह कमला उपनिषद जो कि ऊपर स्पष्ट किया है, वह अपने आपमें महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसके जीवन में धन, वैभव, यश, सम्मान प्राप्त होता रहता हैं।

प्रयोग में इसका पांच बार पाठ करके, फिर "कमला माला" का पूजन करना चाहिए। यह कमला माला विशेष मंत्रों से सिद्ध और सूर्य उपनिषद से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, इस माला को पहले से ही प्राप्त करके रख देनी चाहिए।

इसके बाद साधक घी के सोलह दीपक लगा ले,

कमला तंत्र

इस दीपावली पर्व पर और पत्रिका के इस अंक का यह श्रेष्ठतम प्रयोग है, जिसे दीपावली के दूसरे दिन संपन्न किया जाता है। सामान्य हिन्दी पढ़ा लिखा, साधक भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है।

यह प्रयोग सर्वथा गोपनीय दुर्लभ और महत्वपूर्ण रहा है। वास्तव में ही इस प्रयोग को सम्पन्न करने से व्यक्ति निकट भविष्य में ही आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, और उसे विश्वास हो जाता है, कि आज के युग में भी तंत्र साधना शीघ्र सिद्धिप्रदायक एवं प्रभाव पूर्ण है।

ऐसा महत्वपूर्ण प्रयोग प्राप्त करने के बावजूद भी यदि कोई साधक इस लघु साधना को सम्पन्न नहीं करता, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

निम्न कमला मंत्र की सोलह माला मंत्र जाप उसी आसन पर बैठे बैठे कर ले।

कमला मंत्र

ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौ जगत्प्रसूत्यै नमः॥

जब सोलह माला मंत्र जाप हो जाय तब भगवती लक्ष्मी की विधि विधान के साथ आरती सम्पन्न करें, और उस यंत्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दे, तथा कमला माला को इस यंत्र के सामने या यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें। भविष्य मे जब भी कमला मंत्र का जप करना हो तो इसी कमला माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला फेरे।

वस्तुतः यह मंत्र और यह तांत्रिक प्रयोग अपने आपमें ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करे और अनुभव करे कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ है। ★

शरद पूर्णिमा महोत्सव

इस वर्ष आश्विन शुक्ल १५ तद्नुसार १४-१०-८९ शनिवार को शरद पूर्णिमा है, जो कि अपने आपमें विशेष महोत्सव पर्व शास्त्रों में माना गया है।

धनवन्तरी अपने युग के महान आयुर्वेद आचार्य और विद्वान हो चुके है, वे देवताओं के भी चिकित्सक और वैद्य माने जाते रहे है। समुद्र मंथन के अवसर पर जहां समुद्र से लक्ष्मी, अमृत-कलश, रम्भा, आदि चौदह रत्न निकले उनमें धनवन्तरी भी एक थे। उनका ग्रन्थ "धनवन्तरी सपर्या" अपने आप में अन्यतम ग्रन्थ है।

अमृत प्रयोग

इस ग्रन्थ में शरद पूर्णिमा से संबंधित एक विशेष प्रयोग दिया है, जिसे पिछले हजारों वर्षों से सम्पन्न किया जाता रहा है। भारतीय ग्रामों में आज भी इस प्रयोग को सम्पन्न करते देखे जाते है, शरद पूर्णिमा की रात्रि को चन्द्रमा से किरणे नहीं निकलती अपितु अमृत वर्षा होती है।

शरद पूर्णिमा की शाम को घर में दूध से बनी हुई खीर बनाई जावे, जिसमें बिदाम, पिश्ते, आदि डाल कर और दूध को काफी समय तक उबाल कर खीर को खाने योग्य गाढ़ी बनावे। दूध में चावल डाल कर उबाल कर जो पेय बनता है, उसे खीर कहते है, खीर के अलावा भी इस दिन सुस्वादु भोजन बनावे।

फिर शरद पूर्णिमा की रात्रि को घर की छत पर या ऐसे स्थान पर जहां से चन्द्रमा दिखाई देता है, घर के सब लोग खाना रख कर आमने सामने बैठ जाय और किसी बड़े बर्तन में या परात में खीर ले ले। उस खीर के बर्तन को इस प्रकार से रखे कि उस पर चन्द्रमा की किरणें पड़ें, जिससे कि उस खीर में अमृत अभि-षेक हो सके।

इसके बाद उस खीर में एक तरफ धनवन्तरी यन्त्र को डाल दें, यन्त्र इस प्रकार से डाले कि वह खीर में डूब जाय, लगभग एक घण्टे तक खीर को इसी प्रकार रहने दे, इससे वह खीर पूर्ण रूप से अमृत तुल्य बन जाती है। धनवन्तरी यंत्र आप चाहे तो पत्रिका कार्यालय से प्राप्त कर सकते है।

एक घण्टे बाद उस यन्त्र को निकाल कर जल से धो कर पूजा स्थान में रख दें और घी का दीपक लगा दें फिर खीर सभी थालियों में परोस दें और प्रसन्नता के साथ सब लोग भोजन करे।

ऐसा करने से निश्चय ही शरीर की सभी बीमारियां समाप्त होती है, चेहरे पर तेज, कान्ति और प्रभाव उत्पन्न होता है तथा घर में लक्ष्मी का आगमन प्रारम्भ हो जाता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग वर्ष में एक बार केवल शरद पूर्णिमा को ही सम्पन्न होता है और यह प्रयोग छोटा सा साधारण अनुभव होते हुए भी अपने आपमें शीघ्र प्रभावोत्पादक और महत्वपूर्ण है।

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एस. आर. जे. ६६६७/८६-८७

दीपावली पर्व पर

अभूतपूर्व रियायत

○ केसेट

○ गुरु गीता

एक शानदार केसेट। सुबह सुबह घर में बजाने योग्य केसेट, एक लाजबाब केसेट, जिसमें गुरु गीता के पूरे १०८ श्लोक और उसका हिन्दी में अनुवाद। एक दुर्लभ केसेट। वास्तविक न्यौछावर ६५)रू. रियायती न्यौछावर ३०)रू.

○ सिद्धाश्रम केसेट

जीवन की दुर्लभ एवं अद्वितीय जीवन्त केसेट। जिसमें सिद्धाश्रम स्तवन, गुरु स्तवन और निखिलेश्वरानंद स्तवन समाहित है।

वास्तविक न्यौछावर ६५)रू. रियायती न्यौछावर ३०)रू.

○ ग्रन्थ

लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग

दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग १०५ पृष्ठ, सुन्दर तिरंगा कवर अद्वितीय पुस्तक। वास्तविक न्यौछावर १५)रू. रियायती न्यौछावर १०)रू.

○ भौतिक सफलता : साधना एवं सिद्धियां

जीवन की एक अनमोल पुस्तक, जिसमें जीवन की विविध समस्याओं का समाधान है १२८ पृष्ठ, तिरंगा कवर, सुन्दर पुस्तक।

वास्तविक न्यौछावर २४)रू. रियायती न्यौछावर १०)रू.

धनराशि अभी न भेजें

हमें आप पर भरोसा है-आप धनराशि मत भेजिये आप एक पोस्टकार्ड या पत्र में लिख दीजिये कि आपको क्या चाहिए, हम आपको वी. पी. तथा डाक व्यय जोड़ कर संबंधित केसेट या पुस्तक भेज देंगे।

○ गारण्टी ○

यदि आपको केसेट या पुस्तक पसन्द न आवे तो १५-११-८६ तक वापिस भेज दें, हम आपको पूरा मूल्य लौटा देने की गारण्टी देते है।

सम्पर्क:- मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.)